AGRADIANCE

"To Reach the Good News to the Poor"

For Private Circulation Only

AGRA ARCHDIOCESAN NEWS LETTER

AUGUST 2021

Assumption of
Blessed Virgin Mary

15th August
Independence Day
स्वतन्त्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामानाएँ!

Hearty Congratulations
Dear & Rev. Dn. Kulkant Chhinchani

श्रद्धेय उपयाजक कुलकान्त
को हार्दिक बधाई और
शुभकामनाएं!

St. John Mary Vianney

रक्षाबन्धन की
हार्दिक शुभकामानाएँ!

Archdiocese at a glance

His Grace Dr. Albert D'Souza Felicitated on his 76th Birthday

Schola Brevis & Rite to Admission (Diaconate), SJRS, Prayagraj

Schola Brevis, MVP, Agra

Paridhan Divas, MVP, Agra

Schola Brevis New Comers' Day, SLS, Agra

Ordination to Diaconate of Bro. Kulkant Chhinchani, 25 July 2021, St. Joseph's Church, G. Noida

Editorial

प्रिय मित्रों, **अग्रेडियन्स** का अगस्त महीने का अंक आपके हाथों में है, आशा है कि आपको पसन्द आयेगा।

अगस्त महीना हम सभी भारतवासियों के लिए एक विशेष महत्व रखता है, क्योंकि सन् 1947 में इसी महीने की 15 तारीख़ को हम स्वतंत्र हुए थे। हमारे देश को आज़ाद कराने में हजारों-लाखों स्वतन्त्रता प्रेमियों ने अपनी जान की कुर्बानियाँ दी थीं। यह आज़ादी हमें यूँ ही आसानी से नहीं मिली थी, इसकी एक बहुत बड़ी कीमत हमें चुकानी पड़ी थी, इसलिए हम इसे आसानी से नहीं गवाएँ। भारतमाता के न जाने कितने लाल शहीद हुए थे, तब हमें आज़ादी मिली थी।

इसी महीने की 15 तारीख को हम धन्य कुँवारी मरियम के स्वर्गारोहण का महापर्व मनाते हैं। यह हमारे विश्वास की साक्षी है। माँ मरियम आत्मा और शरीर सहित आसमान में उठा ली गईं। वहाँ से वह अपने भक्तों के लिए निरन्तर प्रार्थना करती हैं। प्रभु ईश्वर ने अपनी प्रतिज्ञानुसार उनके शरीर को कब्र में सड़ने-गलने नहीं दिया। उन्हें सदेह स्वर्ग में आरोहित कर लिया।

इसी महीने की 4 ता. को हम अपने पूर्व महाधर्माचार्य डॉ. आल्बर्ट डिसूज़ा का जन्मदिन भी मनाते हैं। आगरा महाधर्मप्रांत हमेशा उनका आभारी रहेगा, उनके प्यार, संस्कार और सभी सेवाओं के लिए **अग्रेडियन्स** अपनी शुभकामनाएं देते हुए उनके अच्छे स्वास्थ्य और दीर्घ आयु की कामना करती है।

4 अगस्त को ही हम सभी काथलिक विश्वासी लोग पुरोहितों के संरक्षक संत जॉन मेरी वियान्नी का पर्व मनाते हैं। सभी पल्ली पुरोहितों के लिए वे एक आदर्श संत हैं। संत जॉन मेरी वियान्नी के बारे में कहा जाता है, कि वे पढ़ने में बहुत कमज़ोर थे। पुरोहित बनने का अध्ययन भी वे बड़ी मुश्किल से पूरा कर पाए, किन्तु उन्हें आध्यात्मिकता, धार्मिकता एवं ईश्वर में अटूट विश्वास था। इसी के फलस्वरूप वे पुरोहित बने। उन्हें आर्स नगर में भेजा गया, जहाँ लोग ईश्वर से दूर होते जा रहे थे। वे सांसारिकता में डूबते जा रहे थे। संत जॉन ने परम प्रसाद की भक्ति व अपने सात्विक जीवन से वहाँ के लोगों का दिल जीत लिया और उन्हें प्रभु की ओर मोड़ने में पूरी तरह से सफल रहे। आर्स एक आदर्श पल्ली बन गया। लोग घण्टों पंक्तियों में खड़े रहते थे, कि संत जॉन से पाप स्वीकार करें। उनके इन्हीं गुणों के कारण संत जॉन को सभी पुरोहितों का संरक्षक व आदर्श माना जाता है।

महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि ने अपने मासिक संदेश में हमें सच्ची व आध्यात्मिक स्वतन्त्रता के बारे में समझाया है। सच्ची स्वतंत्रता आत्मा की स्वतंत्रता है - अन्तर्रात्मा की आवाज़ है। यह कभी भी किसी का अहित नहीं करने देती। ऐसी स्वतंत्रता हमारे हृदयों में एक प्रकार की आग लगाती है, जो हमें जन-जन के कल्याण के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।

जहाँ दक्षिणी राज्यों में कोरोना के नए मरीज़ों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है, जो कि वास्तव में एक चिन्ता का विषय है, वहीं दूसरी ओर हमारे अपने उत्तम प्रदेश में यह महामारी लगभग समाप्त हो चुकी है - क्योंकि चुनाव भी तो आ रहे हैं न।

इस वर्ष भी हमारे सभी बोर्ड की परीक्षाओं में बेटियों ने हमेशा की तरह बाज़ी मार ली है। कुल रिज़ल्ट 97% के करीब रहा है हालाँकि इस बार परीक्षाए भी नहीं हुईं - सब कोरोना की भेंट चढ़ गईं। फिर भी ताज्जुब है, कि कुछ 3% छात्र उसमें भी असफल हो गए हैं। अब ऐसे असफल, विरले बच्चों की खोज की जा रही है, क्योंकि उनमें से ही बहुत से लोग आने वाले कल में हमारे देश के कर्णधार होंगे...समाज का कल्याण करेंगे।

एक बार फिर से एक लम्बे समय के बाद हमारे महाधर्मप्रांत में इस महीने से छः उपयाजक होंगे। तीन पहले से ही हैं। एक ब्रदर कुलकान्त हाल ही में ग्रेटर नोएडा में अभिषिक्त हुए हैं, और दो (ब्रदर सचित एवं ब्रदर असीम) प्रयागराज में अभिषिक्त होने वाले हैं...सबको बधाई।

इन दिनों संपूर्ण उत्तर भारत में सर्वत्र मूसलाधार वर्षा हो रही है...जान-माल का बहुत नुकसान भी हो रहा है - पुराने रिकार्ड भी टूट रहे हैं। खुदा ख़ैर करे!

प्रभु में आपका,

फादर यूजिन मून लाज़रस

(कृते, अग्रेडियन्स परिवार)

SHEPHERD'S VOICE

INDEPENDENCE DAY

Soon we will celeberate the Independence Day of our country. On that joyous day let us pledge our lives and our love to our Mother Land. Let us rededicate ourselves to the service of our country and our people. Let us resolve that we will not fail to make our contribution to the work of nation-building; that we will strain our every muscle and expend every ounce of our energy to create an Indian society where there is equality and justice, peace and harmony, progress and self-reliance; that we will collaborate with all people of good will to create a kingdom of God here. In that kingdom there will not be walls of prejudice, but only bridges of understanding; there will not be the cancer of doubt, but only a healthy trust. In that society sadness will give way to gladness, weeping and lamenting to singing and dancing; doubt will be replaced by faith, and despair by hope.

But how long a time must pass before such a kingdom arrives? When will such a society ever be born? It will begin to take birth in your heart the moment you can say in all sincerity 'I believe in Jesus Christ; I believe in the Father's love for me and for the world; I believe the Holy Spirit's power to enkindle in my heart the fire of His love'. When the flame of faith burns brightly in your heart, you will be able to say with St. Paul, "I can do all things through Him who strengthens me." Then the fire of love and the flame of faith will spread from your heart to other hearts, even as it spread from St. Paul's heart to Timothy's grandmother Loi's heart and from her heart to her daughter Eunice's heart and from her heart to Timothy's heart.

If the kingdom of God does not mean mere eating and drinking, but justice, peace and joy in the Holy Spirit then it is imperative that every member of that kingdom perform works that promote justice and peace, and radiate joy. Pope Paul VI once remarked, "If we wish to have true peace, we must give it a soul. The soul of peace is love. It is love that gives life to peace, more than victory or defeat, more than self-interest or fear, weariness or need. The soul of peace is love, which for us believers comes from God, and expresses itself in love for men".

The Second Vatican Council says somewhere, "In our times a special obligation binds us to make ourselves the neighbour of every person and actively helping him when he comes across our path, whether he be an old person abandoned by all, a foreign labourer unjustly looked down upon, a refugee child born of unlawful union wrongly suffering for a sin he did not commit, or a hungry person who disturbs our conscience". When our hearts are

filled with love, our eyes will not fail to see injustice done to and violence perpetrated on our brothers and sisters, our ears will not fail to hear their agonizing cries for help, and our conscience will not leave us in peace until we act in their favour. I wish we could make our own what Father Camilo Torres said about himself and his countrymen, "I chose Christianity because I felt that in it I had found the best way of serving my neighbour. I was elected by Christ to be a priest forever, motivated by the desire to devote myself full time to loving my country men. As a sociologist, I wished this love to become effective through science and technology. Upon analyzing Columbian society, I realized the need for a revolution that would give food to the hungry, drink to the thirsty, clothing to the naked, and bring out the well-being of (the citizens of) our country. I feel that the revolutionary struggle is a Christian and priestly struggle. Only through this, given the circumstances of our country, can we fulfill the love that men should have for their neighours."

According to Bible commentator William Barclay, the Magnificat is the most revolutionary document in the world. It speaks of three revolutions. The verse "He scatters the proud in the plans of their hearts" speaks of a moral revolution. The line "He casts down the mighty-He exalts the humble" indicates the social revolution. An economic revolution is depicted in the statement, "He has filled those who are hungry-those who are rich He has sent empty away."

Our resolve to bring about these revolutions through peaceful means will be our fitting tribute to our heavenly Mother Mary and to our motherland India. May Holy Mother Mary intercede for us and for the people of our beloved Bharat. I wish each of you a very Happy Independence Day and the blessings of the feast of Assumption.

Jai Maa Mariam! Jai Hind!

✠ **Raphy Manjaly**
(Archbishop of Agra)

महाधर्माध्यक्ष का संदेश (हिन्दी अनुवाद)

कुछ ही दिनों में हम अपने राष्ट्र की आज़ादी का दिन **स्वतंत्रता दिवस** मनाने वाले हैं। इस शुभ दिन आइए हम अपनी मातृभूमि के प्रति अपने जीवन और प्रेम की शपथ लें। आइए हम एक बार फिर से अपने देश और लोगों की सेवा की शपथ दोहराएं। आइए, हम प्रण करें कि हम अपने राष्ट्र निर्माण कार्य में सहयोग करने से पीछे नहीं हटेंगे। हम अपनी पूरी शक्ति और ऊर्जा एक ऐसे भारतवर्ष के निर्माण में लगाएंगे, जहाँ समानता और न्याय, शांति और सहयोग, उन्नति और आत्म निर्भरता हो, हम सभी भले लोगों और भलाई (अच्छाई) चाहने वाले लोगों के साथ मिलकर इस धरती पर स्वर्गराज्य का निर्माण करेंगे। उस राज्य में पूर्वाग्रह के लिए कोई स्थान नहीं होगा, इसके बदले वहाँ (आपसी) समझदारी के सेतु होंगे, संदेह का कैंसर नहीं होगा, किन्तु लोगों के बीच स्वस्थ विश्वास और भरोसा होगा। ऐसे समाज में वेदना के बदले आनन्द, करुण क्रन्दन और रोने-विलाप करने के बजाय गीत और नृत्य होंगे, शक (संदेह) की जगह विश्वास और निराशा के बदले आशा होगी।

लेकिन ऐसे राज्य की स्थापना में कितना वक्त लगेगा ?

कब इस प्रकार के समाज का जन्म होगा? कब उसकी स्थापना का सपना साकार होगा? यह आपके हृदय में उसी क्षण जन्म लेने लगेगा, जब आप पूरी ईमानदारी से यह कह सकोगे, ''मैं ईसा मसीह में विश्वास करता हूँ; मैं अपने लिए और विश्व के लिए पिता ईश्वर के प्रेम में विश्वास करता हूँ। मैं पवित्र आत्मा की शान्ति में विश्वास करता हूँ, जो मेरे हृदय में उसके प्रेम की अग्नि को प्रज्जवलित करता है। जब आपके हृदय में विश्वास की ज्योति तीव्र प्रकाश के साथ प्रज्ज्वलित होती है, तब आप संत पौलुस के साथ कह सकेंगे, ''मैं उसके द्वारा सब कुछ कर सकता हूँ, जो मुझे शक्ति (सामर्थ्य) प्रदान करता है।'' तब प्रेम की अग्नि और विश्वास की ज्योति आपके हृदय से होकर दूसरों के हाथों तक पहुँचेगी। जैसा कि संत पौलुस के हृदय से होकर तिमथी की दादी लोई के हृदय तक, फिर उसके हृदय से उसकी पुत्री यूनिस के हृदय तक और अंत में उसके हृदय से होकर तिमथी के हृदय तक पहुँची थी।

यदि स्वर्गराज्य का मतलब सिर्फ खाना-पीना नहीं है, किन्तु पवित्र आत्मा में न्याय, शांति और आनन्द है, तब यह अपेक्षित है कि उस राज्य का हरेक सदस्य न्याय और शांति को फैलाने के लिए काम करे और अपने जीवन आचरण से आनन्द की किरणों को सर्वत्र प्रज्ज्वलित करे। संत पिता पौलुस छठवें ने एक बार कहा था, ''यदि हम वास्तव में शांति चाहते हैं, तो हमें इसे अपनी आत्मा देनी होगी। आत्मा की शांति प्रेम है। प्रेम ही शांति को जीवन देता है, जो किसी भी विजय या पराजय, निज स्वार्थ और भय, चिन्ता और आवश्यकता से निश्चय ही बढ़कर है। आत्मा की शांति प्रेम है, जो हम विश्वासियों को स्वयं ईश्वर ही प्रदान करता है, और स्वयं को मानव मात्र से प्रेम में प्रकट करता है।''

द्वितीय वाटिकन महासभा के अनुसार, ''वर्तमान समय में हमें एक विशेष ज़िम्मेदारी (अनिवार्यता) दी गई है, जो हमें अपने पड़ोस के हरेक व्यक्ति के साथ बाँध देती है, कि हम सक्रिय रूप से उन सबकी सेवा-सहायता करें, जिनसे मार्ग में हमारी भेंट होती है, चाहे वह दूसरों द्वारा परित्यक्त कोई वृद्ध हो, कोई परदेसी मजदूर हो, जो किसी के अन्याय का शिकार हुआ हो, चाहे वह किसी अवैध सम्बन्ध से जन्मा कोई शरणार्थी शिशु हो, जिसे उस गुनाह की सज़ा भोगनी पड़ रही है, जो उसने किया ही नहीं या कोई भूखा-प्यासा व्यक्ति हो हमारे अन्त:करण को कचोट रहा हो। जब हमारे हृदय प्रेम से भरे हों, हमारी आँखें किसी भी व्यक्ति जिसके साथ अन्याय किया गया हो, या हमारे भाई-बहन जो किसी हिंसा के शिकार हुए हैं; उन्हें नज़र अन्दाज नहीं करेगी। हमारे कान उनकी करुण पुकार न सुनने की गलती नहीं करेंगे और हमारा अन्त:करण हमें शांति से तब तक जीने नहीं देगा, जब तक हम उसके हक में कोई कदम न उठा लें।''

मेरी कामना है, कि काश हम भी फादर कामिलो तोरेस के शब्दों को अपना बना पाते, जो उन्होंने अपने और अपने देशवासियों से कहे थे; ''मैंने मसीहत (ईसाई मत) को इसलिए चुना, क्योंकि मैंने इसमें अपने पड़ोसी की सेवा करने का सर्वोत्तम तरीका पाया। मैं ख्रीस्त द्वारा चुना गया, ताकि मैं सदा के लिए उसका पुरोहित रह सकूँ। उसने मुझे प्रेरित किया, कि मुझमें अपने देशवासियों से प्रेम करने के लिए अपना संपूर्ण समय दे सकूँ। ऐसे समपर्ण की इच्छा/भावना उसने मुझमें पैदा की। एक समाज शास्त्री होने के नाते यह मेरी इच्छा थी, कि यह प्रेम विज्ञान और तकनीकी के द्वारा प्रभावशाली बन जाए। कोलम्बिया की सामाजिक परिस्थिति का अध्ययन करने पर मैंने यह अनुभव किया कि एक क्रांति की आवश्यकता है, जो भूखे को भोजन, प्यासे को पानी, नग्न को वस्त्र देगी और हमारे सभी देशवासियों की भलाई के लिए कटिबद्ध होगी। मैं महसूस करता हूँ कि ऐसा संघर्ष या क्रांति एक मसीही क्रांति और पुरोहितिक संघर्ष है। हमारे देश की वर्तमान परिस्थिति को मद्दे नज़र रखते हुए, केवल इसी के द्वारा हम उस प्रेम की

स्थापना कर सकते हैं, जो हमारे अन्दर अपने पड़ोसी के प्रति होना चाहिए।''

विलियम बारकले, पवित्र बाईबिल के आलोचक (टीकाकार) के अनुसार धन्य कुँवारी मरियम का गीत **मैग्नीफिकात**, विश्व का सर्वाधिक क्रान्तिकारी दस्तावेज (लेख) है। यह तीन तरह की क्रान्तियों के विषय में बताता है। गीत का यह वाक्य ''वह घमण्डियों के हृदय के विचारों को तितर-बितर कर देता है'', नैतिक क्रान्ति के विषय में बताता है। पंक्ति ''वह शक्तिशाली को उनके सिंहासन से उतार देता है और विनम्र व्यक्ति (दीनों) को महान बनाता है,'' यह सामाजिक क्रान्ति की बात करती है और एक आर्थिक क्रान्ति निम्न पंक्ति में दृष्टिगोचर होती है; ''उसने दरिद्रों को तृप्त किया है और धनियों को खाली हाथ लौटा दिया है।''

इन तीनों क्रान्तियों को शांतिपूर्ण रीति से क्रियान्वित करने का हमारा प्रयास निश्चय ही हमारी स्वर्गिक माता मरियम और मातृभूमि भारत के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगा। पवित्र माता मरियम हमारे लिए और हमारे प्यारे भारतवर्ष के सब लोगों के लिए ईश्वर से प्रार्थना करे। मैं आप सबको स्वतन्त्रता दिवस की शुभकामनाएं और माता मरियम के स्वर्गारोहण पर्व की आशीष देता हूँ।

जय माँ मरियम! जय हिन्द!!

प्रभु में आपका,

✠ **राफी मंजलि**

(आगरा के महाधर्माध्यक्ष)

ARCHBISHOP'S ENGAGEMENTS (AUGUST, 2021)

1	Holy Mass: Holy Communion & Confirmation, Cathedral, Agra	12	Visit to Achalpur & Kasganj
7	Journey to Allahabad	14	Silver Jubilee, Ajay Nagar
8	Diaconate, St. Joseph's Regional Seminary, Allahabad	15	Visit to Hathras & Sadabad
11	Visit to Etah & Bastar	29	Holy Mass: Holy Communion & Confirmation, St. John's Church, Firozabad

With immense joy and profound gratitude to God and Mother Mary, We invite you to pray for us on our

Ordination to Diaconate

to be conferred by His Grace

Most Rev. Dr. Raphy Manjaly

(Archbishop of Agra Archdiocese)

on

8th August, 2021

at

St. Joseph's Regional Seminary

Prayagraj

Eucharistic Missionary: Burn with the Zeal for Evangelisation

A talk given by Rev. Fr. Varghese Kunnath (Director- Sadbhavana) on the occasion of Priestly Monthly Recollection, on 28th July, 2021.

Who is a missionary?

Missionary is a person sent on a religious mission, especially one sent to promote Christianity,to a place where people have not heard about Jesus Christ.

A missionary is also known as Evangelist, apostle, preacher, minister, priest, campaigner, crusader, champion, converter, promoter, advocate and proponent.

Definition: "missionary" Not found in Scriptures "Apostle" translated into Latin is misio, meaning "a sent one" Selecting and commissioning is illustrated in Luke 6: 12-16o "and all night He continued in prayer to God. And when day came, He called His disciples to Him (probably about 70); and chose twelve of them, whom He also named as apostles" At Antioch (Acts 13:1-3) church leaders were selected and sent.

Characteristics of a missionary - (John 17:13-19)

1. Ordinary person
2. Called by God
3. Person with God experience
4. Full time ministry of the word and prayer
5. Cross geographical and cultural boundaries
6. Preach the Gospel in unreached places
7. Distinctly driven
8. Especially equipped
9. Ardent love for Eucharist or Life governed by Eucharist
10. Ready to be hated, persecuted and martyred for the Truth (The Word of God)

A missionary must be, primarily, a Eucharistic missionary.

What is Eucharist?

From earliest times, the Eucharist has been at the heart of the Church worship. In it is celebrated the memory of the life, death and Resurrection of Jesus Christ.

The Holy Eucharist is the Sacrament of the New law, which our Lord Jesus Christ Instituted permanently. His body and blood, soul and divinity are contained, offered and received under the appearance of bread and wine.

The Eucharist is the Catholic Church's fundamental act of thanksgiving worship of God, constituting at once a Sacrifice-Sacrament, a Communion-Sacrament, and a Presence-Sacrament.

The institution of the Eucharist by Jesus on the night before his Crucifixion is reported in four books of the New Testament (Matthew 26:26-28; Mark 14:22-24; Luke 22:17-20; and ICorinthians 11:23-25).

According to the Eucharistic doctrine of Roman Catholicism, the elements of the consecrated bread and wine are transubstantiated into the body and blood of Christ: their substance is converted into the substance of the body and blood, although the outward appearances of the elements, their "accidents," remain.

The Catholic Church states that the Eucharist is the body and blood of Christ under the species of bread and wine.It maintains that during the consecration, the substances of the bread and wine actually become the body, blood, soul and divinity of Christ (transubstantiation) while the appearances or "species" of the elements remain (e.g. colour, taste, feel, and smell).

The Holy Eucharist is the very center of catholic worship, the heart of catholic life. Because the (catholic) church believes that the Son of God is truly present in the Blessed Sacrament.

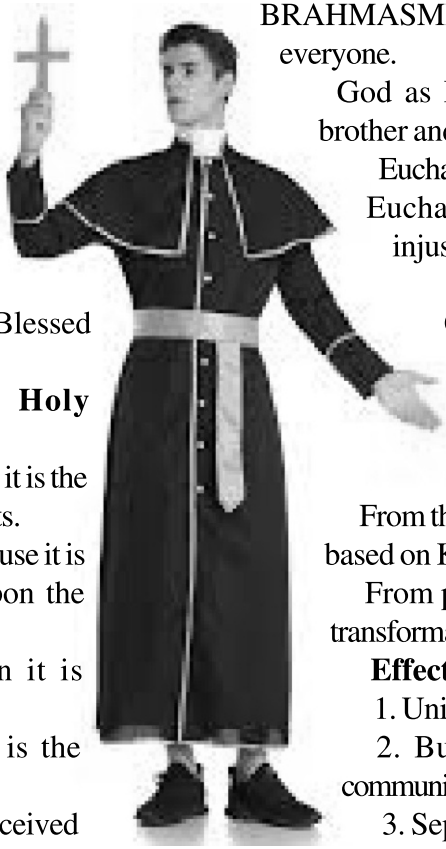

Other Names of the Holy Eucharist:

Blessed Sacrament because it is the most excellent of all sacraments.

Sacrament of the Altar because it is consecrated and received upon the altar

Holy Communion when it is received by the faithful

Bread of life because it is the nourishment of one's soul

Holy Viaticum when it is received during a serious illness, or at the hour of death.

"The Holy Eucharist is the heart and the Summit of Church's life for in it, Christ associates His Church and all her members with His sacrifice of praise and thanksgiving offered once for all on the cross to his Father; by this sacrifice he pours out the graces of salvation on his Body which is the Church" (CCC 1407).

Eucharist is Communion

The Grace and Mission flows from Eucharist

Eucharist constitutes the community

Eucharist is a sacrament of love (hate the sin and love the sinner)

Eucharist is a bond between communion and community

Eucharist leads to God within - 'AHAM BRAHMASMI'. God In everything and in everyone.

God as Father and Mother, God as brother and sister.

Eucharist leads to Prophetic Mission.

Eucharist is to speak against the injustice as John the Baptist did.

Eucharist leads to Educate, to Challenge, to Confront and to Transform.

Eucharist is to be celebrated inside out. Eucharist for 24 hours.

From the non-kingdom values to a life based on Kingdom Values

From personal conversion to social transformation.

Effects of the Sacrament

1. Unites us with Christ
2. Building up of the Christian community
3. Separates us from our sins
4. Takes away social or racial differences
5. To reconcile and be reconciled to and with the Church

The Real Presence of Jesus Christ in the Sacrament of the Eucharist

People have asked number of questions about the Real Presence of Jesus in The Eucharist. Some important questions are as follows.

Why does Jesus give himself to us as food

and drink?

Why is the Eucharist not only a meal but also a sacrifice?

When the bread and wine become the Body and Blood of Christ, why do they still look and taste like bread and wine?

Does the bread cease to be bread and the wine cease to be wine?

Is it fitting that Christ's Body and Blood become present in the Eucharist under the appearances of bread and wine?

Are the consecrated bread and wine "merely symbols"?

Do the consecrated bread and wine cease to be the Body and Blood of Christ when the Mass is over?

Why are some of the consecrated hosts reserved after the Mass?

What are appropriate signs of reverence with respect to the Body and Blood of Christ?

If someone without faith eats and drinks the consecrated bread and wine, does he or she still receive the Body and Blood of Christ?

If a believer who is conscious of having committed a mortal sin eats and drinks the consecrated bread and wine, does he or she still receive the Body and Blood of Christ?

Does one receive the whole Christ if one receives Holy Communion under a single form

Is Christ present during the celebration of the Eucharist in other ways in addition to his Real Presence in the Blessed Sacrament?

Why do we speak of the "Body of Christ" in more than one sense?

Why do we call the presence of Christ in the Eucharist a "mystery"?

Conclusion

By his Real Presence in the Eucharist Christ fulfils his promise to be with us "always, until the end of the age" (Mt 28:20). As St. Thomas Aquinas wrote, "It is the law of friendship that friends should live together. . . . Christ has not left us without his bodily presence in this our pilgrimage, but he joins us to himself in this sacrament in the reality of his body and blood" (SummaTheologiae, III q. 75, a. 1). With this gift of Christ's presence in our midst, the Church is truly blessed. As Jesus told his disciples, referring to his presence among them, "Amen, I say to you, many prophets and righteous people longed to see what you see but did not see it, and to hear what you hear but did not hear it" (Mt 13:17). In the Eucharist the Church both receives the gift of Jesus Christ and gives grateful thanks to God for such a blessing. This thanksgiving is the only proper response, for through this gift of himself in the celebration of the Eucharist under the appearances of bread and wine Christ gives us the gift of eternal life.

Let us pray

God our Father, we thank you for choosing us as Missionary Priests.

Fill us with the qualities of the Missionary.

Fill us with the burning zeal for the salvation of souls.

Thank you Jesus for the Eucharist. Help us to live the Eucharist 24 hours of the day.

Fill us with your Holy Spirit to live as exemplary Missionary Priests for the Glory of God.

Help me Jesus to offer the Holy Mass as my First Mass, Best Mass and The Last Mass.

Make this Presbyterium loving, respectful, sharing, trusting, grateful, encouraging and appreciating family where we long to see each other and where we become sensitive to the needs and feelings of each other. Mary, be with us always. Amen.

हम धर्म परिवर्तन कराते हैं...?

आजकल यह मुद्दा बड़े जोर-शोर से गर्मा रहा है कि कुछ लोग धर्मपरिवर्तन कराते हैं। आरोपों का दौर जारी है। पवित्र ग्रन्थों का अपमान... कोई दोष नहीं मिलता तो रात-दिन तांत्रिक विद्या में लिप्त रहने वाले अब चर्च पर ही तंत्र मंत्र विद्या सिखाने का दोष लगा रहे हैं। वैसे यह कुत्सित मंशा तो सत्तर-अस्सी साल से चली आ रही है परन्तु जब उन्मादियों को खाद-पानी मिलने लगता है तब उन दिनों वे एक दम बौराए रहते हैं...धार्मिक (प्रार्थना) स्थलों की तोड़फोड़...उत्पात मचाना, आजकल ये घटनाक्रम तेजी से फैल रहे हैं...परन्तु इनसे हमें घबराना नहीं है। हाँ, हम धर्म परिवर्तन कराते हैं और कराते रहेंगे?

तो बन्धुओं! यह तो बहुत ही परिश्रम का काम है और पुण्य कर्म भी, साथ में असाध्य भी। आप क्यों कराते हैं 'धर्म परिवर्तन'? बन्धुओं! पहले हम धर्म की परिभाषा तो समझ लें, कि धर्म क्या है? इसे तो जानें। भक्तों! जो 'धारण' करने योग्य हो वही 'धर्म' है। जो 'ग्रहण' किया जा सके वही 'धर्म' है।

सबके धर्म अलग-अलग हैं, क्योंकि सबका स्वभाव अलग-अलग है। देखो फूलों का स्वभाव महकना तो काँटों का स्वभाव चुभना है, अग्नि का स्वभाव जलना तो पानी का स्वभाव बुझाना है। सूर्य का स्वभाव दहकना तो चन्द्रमा का स्वभाव शीतलता प्रदान करना है और बिच्छु का स्वभाव डंक मारना तो मुनि का स्वभाव क्षमा, दया करना है। हम मानव भी तो इसी तरह अपने-अपने धर्म अर्थात् स्वभाव का निर्वाह करते हैं...और गर्व से कहते हैं, यह मेरा 'धर्म' है। यानि अपने स्वभाव की प्रशंसा। इसमें गलत क्या है? हम मानव अपने संस्कार, संस्कृति, परवरिश और अपने परिवेश के कारण अलग-अलग स्वभाव के हो जाते हैं... हमारा जीवन धर्म अलग-अलग किस्म का होता ही रहता है...जीवन पर्यन्त...हमेशा...। लेकिन...लेकिन मित्रों जो मानव स्वभाव (धर्म) समाज द्वारा मान्य न हो...कानून और मन-मस्तिष्क द्वारा स्वीकार्य न हो उसे बदलने में हर्ज ही क्या है? बन्धुओं! मैं यहाँ पूजा-पद्धति, ग्रन्थ, पाठ की बात नहीं कर रही हूँ, धर्म हमारे स्वभाव की व्याख्या करता है जबकि; जातियाँ अपने-अपने विशेष रीति-रिवाज, पूजा-पाठ की पद्धति को दर्शाती है। 'धर्म' और 'पूजा पद्धति' दोनों अलग हैं।

अब आप ही बताइए। यदि कोई स्वभाव से ही झूठ बोलता हो, चोरी करता, प्रतिशोधी, क्रोधी, झगड़ालू, अन्ध विश्वासी, असंयमी और समाज विरोधी कार्य करता हो तो क्या मैं और आप उसके इस स्वभाव यानि धर्म को बदलने, परिवर्तित करने की कोशिश नहीं करेंगे? या उसे यूँ ही पतन की ओर जाते देखते रहेंगे? कदापि नहीं, हमारा फर्ज है उसका जीवना बचाना। एक सच्चा हितैषी यही करता है भटके हुओं को सही मार्ग दिखाना, उसे बदल देना। आखिर कारागार और न्यायालय भी तो मनुष्य के धर्म (स्वभाव) में परिवर्तन लाने का ही तो काम कर रहे हैं। प्रत्येक की पूजा पद्धति यही 'धर्म-परिवर्तन' ही तो कर रही है...एक हम ही नहीं।

हाँ! एक मसीही होने के नाते मेरी और आपकी यही जिम्मेदारी होनी चाहिए कि चाहे कोई भी इन्सान हो, किसी भी जाति, सम्प्रदाय का हो उसके गलत स्वभाव (धर्म) में परिवर्तन लाना है उसकी आत्मा को बचाना अवश्य है। माता-पिता, गुरुजन, धर्मगुरु सभी यही कोशिश करते हैं कि मानव स्वभाव यानि 'धर्म' में परिवर्तन आए। क्या यह गलत है? और हम मसीही लोगों के लिए परमेश्वर के सम्मुख खड़े होने के लिए सुयोग्य स्वयं को ही नहीं बल्कि औरों को भी बनाना है। हम पाप से घृणा करते हैं पापी से नहीं। हम चाहते हैं दूसरों का भी जीवन बचे। प्रेम क्षमा, दया, सभी के जीवन मूल्य हों।

अब आप कहेंगे कि क्या आपने ही इस काम का ठेका लिया हुआ है? तो मेरे प्रिय बन्धुओं! हमने तो पूरा टेण्डर लिया हुआ है क्योंकि, यह मानव जीवन भी तो बार-बार नहीं मिलता है; इसी जन्म में क्यों न हम खुद भी सुधरें और दूसरों को भी सुधारें। आखिर सुन्दर समाज, संसार तभी तो सुन्दर होगा जब हम और आप सभी सुन्दर स्वभाव (धर्म) के होंगे। धरती को स्वर्ग बनाना मेरी और आपकी ही तो जिम्मेदारी है।

कितने नादान हैं वो जो वचन रूपी प्यार बांटने वालों पर अत्याचार करते हैं, उन्हें सताते और उनकी हत्या कर देते हैं... कहीं धर्मस्थल माफ कीजिए, प्रार्थना स्थल तोड़ते हैं, पवित्र ग्रन्थ फाड़ते हैं। मूर्खों! ऐसा करने से कहीं पुण्य कार्य रुका करते हैं।

निर्बुद्धियों को कौन समझाए कि हमारे देश भारत के संविधान अनुच्छेद 26 में स्पष्ट लिखा है- ''प्रत्येक व्यक्ति अपने धर्म प्रचार-प्रसार के लिए स्वतंत्र है; साथ ही दूसरों (के धर्म) की गलत बातों का विरोध करने के लिए भी स्वतंत्र है। इसे कोई नहीं रोक सकता।''

संत मत्ती के सुसमाचार के अध्याय 24:9 में स्पष्ट लिखा है- तो हमें घबराना नहीं है। प्रभु येसु का शुभागमन निकट है - स्वागत के लिए तैयार रहो...अन्य को भी तैयार करो...वह प्रकट रूप से नहीं आ रहा...वह मेरे और आपके हृदय में आना चाहता है...मसीही स्वभाव 'धर्म' को ग्रहण करो।

निशी अगस्टीन (सह-सम्पादिका)
अग्रेडियन्स पत्रिका, आगरा

The Holy Father's Prayer Intention
AUGUST - 2021
Intention for Evangelization - The Church: Let us pray for the Church, that She may receive from the Holy Spirit the grace and strength to reform herself in the light of the Gospel.

पवित्र त्योहार: रक्षाबन्धन

हिन्दुओं के व्रत, पर्व और त्यौहारों की श्रृंखला में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी रक्षाबन्धन है। रक्षाबंधन का त्यौहार सावन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। रक्षाबन्धन को राखी का त्यौहार और 'सलोनो' भी कहा जाता है। इस दिन बहनें अपने भाइयों के दाहिने हाथ की कलाई पर राखी बांधती हैं और उनसे उपहार पाती हैं। रक्षाबन्धन के दिन पुरोहित भी अपने यजमानों के हाथों की कलाइयों पर राखी बांधते हैं।

महाभारत काल में पाञ्चाल देश की राजकुमारी द्रौपदी ने भगवान श्रीकृष्ण को राखी बांधी थी। कहते हैं कि एक बार श्री कृष्ण के हाथ में चोट लग जाने से खून रिसने लगा। भगवान श्रीकृष्ण के हाथों में खून देखकर राजकुमारी द्रौपदी ने तत्काल अपनी ओढ़नी फाड़कर उस पर पट्टी बांध दी। इस पर श्रीकृष्ण ने द्रौपदी से कहा ''बहिन, यह पट्टी मुझ पर तुम्हारे ऋण के समान रही। आज से तुम्हारी रक्षा का भार मेरे ऊपर रहेगा।''

जब कौरवों की द्यूत सभा में महाबली दुशासन द्वारा द्रौपदी का चीरहरण किया जा रहा था, तब द्रौपदी ने अपनी रक्षा के लिए भगवान श्रीकृष्ण को पुकारा। उस अवसर पर श्रीकृष्ण ने द्रौपदी की लाज की रक्षा की और राखी का कर्ज चुकाया।

रक्षाबन्धन की महत्ता पर अनेक रोमांचकारी घटनाएं इतिहास के सुनहरे पृष्ठों पर अंकित हैं। अनेक वीर नारियों ने अन्य धर्मावलम्बियों के आक्रमण करने पर उन्हें अपना धर्मभाई बनाकर राखी बांधकर अपने सतीत्व की रक्षा की थी। सोफिया के राजा द्वारा पुरुष को अपना राखीबंध भाई बनाना और कर्मवती का मुगल बादशाह हुमायूँ को अपना राखी बंध भाई बनाना इतिहास की अविस्मरणीय घटनाएं हैं। रक्षाबन्धन का आदर्श महान है। रक्षाबन्धन भाई-बहन को रक्षा स्नेह के एक सूत्र में पिरोने वाला परम पवित्र त्यौहार है।

साभार: उमाशंकर तिवारी (दैनिक जागरण)

To those on the Path, Suffering is GRACE!

There was a great experiment done in the early 1980s called the 'Bio-dome'. It was an exercise to create the perfect living environment for human beings, plant, and animal life. A huge glass dome was constructed and an artificial, controlled environment was created with purified air and water, filtered light, and so on, offering the perfect growing conditions for trees, fruits and vegetables...and humans. People lived in the Bio-dome for many months at a time, and it was wonderful because everything seemed to do well, with one exception. When the trees that were planted grew to be a certain height, they would simply topple over. It baffled scientists for the longest time, until one day they realized the one natural element they forgot to recreate in the Bio-dome: WIND! Trees need wind to blow against them, which in turn causes their root systems to grow deeper into the soil, and supports the tree as it grows taller.

What a great lesson we can take from the Bio-dome experiment! Who among us doesn't long for a perfect growing environment with no disruptions from outside influences? We strive to avoid the times of contrast and tension, those times when the challenges of daily life push against us. When they do, the normal tendency is to curse them. If the trees could talk, I wonder if we would hear them curse the wind each time they encountered a storm. More likely, I believe we would hear them thank the wind for assisting them in deepening their root system, enabling them to grow stronger and taller. That's nature's wisdom at work!Watch how a tree bends and sways gracefully when the wind blows against it. It does not stand rigid, resisting the flow of energy. It does not push back. The tree accepts the strong wind as a blessing that helps it grow.

Recently I went through one such gush of strong winds in my life. My father whom I am most attached to in this world took gravely ill and in spite of all possible medication and fervent prayers of so many caring souls, there seemed to be no improvement in his health. This sickness of his was a devastating blow for him as well as for me; as we both have been a sort of 'control freaks'; who always needed to feel we had hold of the reins. And here we were…experiencing the space of not-knowing, of insecurity, of deep physical as well as mental agony - confused about what treatment to choose; not convinced that it was working; not sure if his doctors really knew what they were doing; not knowing 'if this is it, how long we have got'; 'what lies ahead'…! Being 'in this gap' - brought in both of us a growth (through deep inner pain) towards acceptance of our not being in charge of life, and to learn what it really means to truly let go.

Now I can better understand what Jesus might have gone through during His agony in the garden, and later on, on the Cross; when for a moment, He even felt that His beloved Father too had forsaken Him! Now I know what it means…when even God doesn't seem to be hearing our prayers! And the answer that God has for us when we go through such trying times, is too deep and sacred to be put into words!

In his book, 'Choices in Healing', Michael Lerner talks of the "creative role in illness is helping us find our true selves - in moving us forward on our life paths." He notes that "In a society that has

forgotten how to meditate while healthy; many people are guided to deep contemplation of the meaning of life only through illness."Most of the people, whose bodies are not crippled or never became ill, may be in the last account losers, not winners. They are so comfortable with their body that they remain identified with the body. But when one is gravely ill, one cannot identify with the body anymore; it is too painful. One is forced to separate oneself from the body and this very separation will bring witnessing, watching, and deep alertness.

Friends, we may try to avoid what we see as 'negative' experiences in life, yet it's interesting to remember how a pearl is formed in an oyster. It's not a product of the oyster being in a joyful, positive and creative mood, but of its being irritated (by a grain of sand)! Like a tree, we too need the contrast of the winds of life pushing against us. We too need to go through devastating moments that make us sweat blood and hold on to almost nothing. In such times, we need to remember that infinite intelligence is the soil, the essential foundation upon which we grow our lives. Then we can view the challenges in our lives as blessings. It is that contrast that develops our character and deepens our spiritual roots in the rich soil of being; to be less identified with our body-mind; to know the truth of who we really are behind our day-to-day persona, to be more accepting, open, compassionate, grateful and detached.

There is no need to seek suffering, but when we find it, accept it. At times, we create misery for ourselves out of our unintelligence; by wanting only days and not nights, wanting only smiles and not tears. *So there is suffering that is useless - if you create it. But there is a suffering which is very meaningful - if life gives it to you.*

As a mindfulness practice, consider the following: Take a look at your challenges -- those times of contrast you may currently have blowing as gale-force winds in your life -- and give thanks for them. See them as the wind... and see yourself as a tree. *Then turn to the Source and deepen your roots into the truth of who you really are. Those are the times when your taproot draws its life force from the creator.* There is no such thing as a perfect life. If there were, we could not survive in it. Be thankful Life is as it is! Be flexible... bend and sway with the wind. Grow deep and you will stand tall!

Wish you 'transitional' experience of Good Friday and 'transforming'grace of Easter!

Sr. Rekha Punia, UMI
Nirmala Provincialate, Greater Noida

रिश्तों का तराजू

नफरत के तराजू में इंसानियत हल्की पड़ गई,
जिनको खुदा ने फरिश्ता बनाकर भेजा था।
उनकी नजरे दुनिया की चकाचौंध में दब गई,
रिश्तों का मोल पानी में बह गया।
अपनों का साथ फरेब में बदल गया,
हम लेकर चले थे वफादारी तराजू से तोलने।
दगा देने वाला आँखों की पट्टी खोल गया।।

शिल्पा पॉल, आगरा

DATES TO REMEMBER

AUGUST

01 B.D. Fr. Cyril Prakash Moras
04 B.D. Archbishop Albert D'Souza
04 O.D.Fr. John Roshan Pereira
05 B.D. Fr. Sunil Mathew
09 B.D. Fr. Raphy Vallachira
12 D.A. Fr. Joe Vadakkekara
15 B.D. Fr. Sebastian Kollithanam
15 B.D. Fr. Philip Correia
24 O.D. Fr. Peter Parkhe
26 B.D. Fr. Prakash Rodrigues

The Name 'Yahweh' in Psalms

God is known with a personal name in the Psalms and Hebrew Scriptures. When a personal name becomes more distinct and definite, the relationship has a foundation on which to develop. The famous story of Moses (Ex 3:13-15) represents what was no doubt fundamental also for the Psalms - that God Himself has disclosed His name 'Yahweh' to His worshippers, therefore bestowing the means for Him to be invoked (zikri) through all generations. The story is probably also best guide to the meaning sensed in the name (playing on the verb 'to be', hwh/hyh), appropriate for the One Who Is and Only Is, the unique, underived reality, the absolute authority.

The name 'Yahweh' occurs no less than 650 times in the Psalms and its short form 'Yah' 43 times. It is usually found at the beginning of the Psalms of distress (3, 5, 6, 7 etc.) as essential grace - given word that calls the Saviour into the encircling darkness. In psalms of praise (not least in the name's short form in the phrase halelu - yah, 'alleluia') it marks the Holy One, who alone is worshipped. His exclusive role is marked also in emphatic phrases such as 'Yahweh' (and no other) reign (93:1), 'Yahweh is my shepherd' (23:1).

In later times there developed such awe for the name 'Yahweh' such fear of using it unworthily, that open pronunciation of it was avoided. An early example of this evidence may be found in 42- 83, where the more general 'Elohim' (God) is usually preferred - thought to be an editorial revision carried through about the fourth century BCE before the blocks of psalms had come together into their present combination. Subsequently it became a standard practice (and to this very day) to pronounce 'Adonay' (the Lord) wherever yhwh (for Yahweh) was written. Already the Greek translators (third and second Centuries BCE) rendered the name throughout with Kurios ('Lord', sometimes with the article or possessive pronoun). This was the practice inherited by our English Bibles, which generally have 'the Lord' and in a few special cases offer 'Jehovah', a confused version of 'Yahweh'.

The Jerusalem Bible, emanating from the academic wisdom of the French Dominicans, bravely returned to 'Yahweh' throughout. This procedure is true to the original theology of God known by name, but must be a struggle against its strangeness in translation and against the gulf of millennia in the tradition of usages. For Christians the wonder of God is known in and through a name has come to center in the Lord Jesus Christ, to whom is given the name above all names (Phil 2:9), here they find the name and indeed the person that brings the expression of the One Who Only Is.

Though the avoiding of pronouncing 'Yahweh' in later times was contrary to the very purpose of the revelation of the name, it was not altogether a surprising development in view of the theology of the name reflected in Psalms. The name in effect seen as little short of God Himself made manifest. The name itself is praised as, like God, uniquely holy, powerful, faithful and saving. Revealed especially to His covenanted people (76:1), it is also the radiance of His glory which fills the world (8:1, 9). It is experienced as God's power and presence abiding in the sanctuary of Zion (74:7) and reaching from there in salvation (20:1-7).

-Fr. Alok Toppo

मानवाधिकार कानून की बुलंद आवाज़: अमर मसीहा - स्टेन स्वामी!

मानवाधिकार की इंकलाबी आवाज़...जो सदियों तक गूँजती रहेगी, इस आवाज़ की गर्जना को जब सत्तानशीन खामोश न कर सके तो उनकी हत्या कर दी गयी। उनकी हत्या एक कायराना अन्दाज़ में सुनियोजित, जघन्य, नपुंसक कार्यवाही।

निर्भीक समाजसेवी-स्टेन स्वामी का जन्म 24 अप्रैल सन 1937 को तमिलनाडु के एक किसान परिवार में हुआ। स्नातक शिक्षा पूरी कर आप ईसाई समाज के पुरोहित बने। समाज सेवा कार्य के दौरान जब आप झारखण्ड क्षेत्र में अपनी सेवाएं दे रहे थे तब वहाँ उन्होंने आदिवासियों की बेहद दयनीय स्थिति देखी। उनकी दुर्दशा तथा सीधेपन पर स्वामी का हृदय व्यथित हो उठा। उन्हों ने आदिवासियों के अधिकार की लड़ाई वहीं से शुरु कर दी। वहाँ दबंग पूँजीपति, उद्योग के नाम पर आदिवासियों की जमीन, जंगल, पोखर, खेत, नदी जबरन हड़प रहे थे, विरोध करने पर आदिवासियों को बुरी तरह मारा-पीटा जाता, उन्हें बंधुआ मजदूर बनाया जा रहा था, निर्दयतापूर्वक अमानवीय व्यवहार किया जाता और दबंगों को सरकार का समर्थन प्राप्त था। सत्ताधारी पूँजीपतियों से मिले हुए थे। ऐस में कानून के ज्ञाता फादर स्टेन स्वामी आदिवासियों की आवाज बन कर उभरे। स्वामी को आदिवासियों को संविधान में उनके अधिकार से अवगत कराया। अनुच्छेद 5 व 6 अनुसूची के विषय में उन्हें विस्तार से समझाया और अपने अधिकार के प्रति उन्हें जागृत किया; फलस्वरूप आदिवासियों ने जहाँ-जहाँ 5 व 6 अनुसूची लागू होती थी, उस क्षेत्र में गैर आदिवासियों और बाहरी संदिग्ध व्यक्तियों, विशेषकर उद्योग के नाम पर भू-माफियाओं (लुटेरों) के वहाँ आने पर रोक लगा दी, ताकि उनकी भूमि, वन, खेत, नदी आदि सुरक्षित रहें जिसका मार्गदर्शन स्टेन स्वामी कर रहे थे। वे संविधान के दायरे में रहकर आदिवासियों की कानूनी नैतिक मदद कर रहे थे।

स्टेन स्वामी समाज शास्त्र के विद्धान थे इस विषय का अध्ययन उन्होंने तब किया था जब लोग समाजशास्त्र विषय में अनभिज्ञ थे। शान्तिपूर्वक उनकी इस लड़ाई में सरकार भी उन पर हाथ नहीं डाल पा रही थी। आदिवासियों की आवाज बने स्वामी जी ने उनमें हिम्मत भर दी थी। उनकी निर्भीकता के आगे सरकार घुटने टेकने को मजबूर हो रही थी। स्वामी जी का कोई दोष न मिलने पर उन्हें भीमा कोरेगाँव के फर्जी केस में उन्हें जेल में डाल दिया गया। उन पर आतंकी माओवादी होने का आरोप लगाया गया; इतना ही नहीं, उन पर पी.एम. की हत्या की साजिश रचने वाला भी बता दिया गया, उनके कम्प्यूटर, लैपटॉप में फर्जी वार्ता डाल दी गयी... उनके खिलाफ अनेकों झूठे आरोप तैयार किए गए थे।

मित्रों! ऐसा पहली बार नहीं हुआ है। आपको बता दें कि जो भी आदिवासियों के लिए उनके अधिकारों की लड़ाई लड़ता है सरकार उससे भयभीत होकर उसकी आवाज को दबाने के लिए उन्हें जेल में डाल देती है, उसे हमेशा के लिए खामोश कर देती है। सदियों से यही होता आ रहा है। इसी संदर्भ में आज भी अनेक आदिवासी नौजवान बाईस तेईस वर्षों से जेलों में बन्द हैं। चौरासी वर्षीय वृद्ध स्टेन स्वामी पर लगे झूठे आरोप अपने आप में ही फर्जी बकवाद हैं। सोचिए भला 84 वर्ष का बूढ़ा, जर्जर शरीर के स्वामी, पार्किंसन रोगी, जो अपने आप पानी का गिलास नहीं उठा सकता था, भोजन की तो बात

ही छोड़िए। इलाज के नाम पर सभी संवेदनहीन अस्पताल। उन्हें तिल-तिल कर मरने को मजबूर किया गया था। 22 अक्टूबर 2020 को जब वे बेहद बीमार हालत में थे; उन्होंने कोर्ट से अपील की थी कि उनका उचित इलाज कराया जाए जिसे कोर्ट ने भी साफ इन्कार कर दिया। मिलीभगत की पराकाष्ठा थी। इन्सानियत मर गयी थी सबकी, कोर्ट, पुलिस, प्रशासन, सरकार सबकी जेल प्रशासन की थी।

बाद में उन्हें अस्पताल से जेल, जेल से अस्पताल ले जाने का कुचक्र खेल खेला जाने लगा। मई माह में उन्हें जे.जे. हॉस्पीटल तीन-तीन बार ले जाया गया। जबरदस्ती, बेवजह, बूढ़े से खेल? स्टेन स्वामी अन्तिम समय में रांची (बिहार) में अपनों के बीच रहना चाहते थे, जिसे नजरअन्दाज कर दिया गया। काँपते हाथों से जो गिलास नहीं उठा सकते थे तो पानी पीने के लिए प्रशासन से उन्हें सिपर तक मुहैया नहीं कराया ताकि वे प्यासे मर जाएँ।

बेहद गम्भीर स्थिति में अन्तिम घड़ी में उन्हें होली फैमिली अस्पताल ले जाया गया ताकि उनकी मौत का ठीकरा दूसरों के सिर पर फोड़ें और वही हुआ। कुत्सित मंशा पूरी हुई। अब उनके तथाकथित हत्यारे सब निर्दोष हैं, केवल सरकार की निगाह में, खुद अपनी निगाह में, लेकिन हमारी निगाह में वे सब कातिल हैं- सरकार, जेल, अस्पताल, कानून सब।

पचास साल तक स्टेन स्वामी ने ढाल बनकर झारखण्ड में स्वदेशी विदेशी कम्पनियों की लूटपाट से आदिवासियों का कानूनी बचाव किया। उन्होंने आदिवासियों के अधिकार पर अनेक लेख पुस्तकें लिखीं जिनमें- 'बंद कैदियों का सच', 'आदिवासियों की आवाज', 'विलम्ब से न्याय' आदि प्रमुख हैं। कौन सा क्षेत्र नहीं था जहाँ स्टेन स्वामी समाज के दबे-कुचले, पिसते, दलित, लोगों के मसीहा न थे। बोझ से दबे लोगों के मसीहा स्टेन स्वामी ही थे।

स्टेन स्वामी बेशक नहीं रहे, लेकिन उनकी ये कुर्बानी अन्धे कानून के ताबूत की कील ही सिद्ध होगी। उनकी अन्तिम साँस तक लड़ी गयी जंग जरूर रंग लायेगी। आदिवासियों की जीत अवश्य होगी उन्हें अपने कानूनी अधिकार पता हो गए हैं। स्टेन स्वामी उनमें हिम्मत भर गए हैं।

हमारा संविधान कानून ही कहता है- ''हर एक को निर्दोष माना जायेगा, जब तक कि उसका दोष सिद्ध न हो।'' इसके बावजूद उन्हें जेल में डाला गया, अप्रत्यक्ष यातना दी गयी, शारीरिक, मानसिक, प्रताड़ना, अपमान। यहाँ तक कि उनकी अन्तरिम जमानत की अपील भी बार-बार ठुकरा दी गयी थी। इसी अन्धे कानून, दोगली सरकार की आँखें खोलने के लिए स्वामी की आँखें बन्द हुईं, लेकिन वे दलितों को जगा गए। अब आदिवासियों की आँखें खुली रहेंगी और खुली आँखों का निर्णय सबको झकझोरने की ताकत रखता है।

स्टेन स्वामी अमर हैं, अमर रहेंगे, प्रभु येसु की तरह, महात्मा गाँधी के समान, सभी शहीदों की मानिन्द।

-निशी अगस्टीन (सह-सम्पादिका)
मासिक पत्रिका 'अग्रेडियन्स,' आगरा

प्यारा प्यारा मेरा देश, सबसे न्यारा मेरा देश।
दुनिया जिस पर गर्व करे, ऐसा सितारा मेरा देश।
चांदी सोना मेरा देश, सफल सलोना मेरा देश।
गंगा-जमुना की माला का, फूलों वाला मेरा देश।
आगे जाये मेरा देश, नित नये मुस्काये मेरा देश।
इतिहासों में बढ़-चढ़कर नाम लिखाये मेरा देश।

सौजन्य: सिम्मी (एग्नेस) थॉमस

मसीह सब सृष्टि में प्रथम है

प्रिय अज़ीज़ों, संत पौलुस द्वारा पवित्र शास्त्र में अंकित वचन हमें प्रेरणा देता है कि अविश्वासियों के साथ असमान जुए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल-जोल? ज्योति और अंधकार की क्या संगति? मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता? मूर्तियों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध? हम तो जीवित परमेश्वर के मंदिर हैं। (2 कुरिन्थियों 6:14-16)

मसीह अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहलौठा है, क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, सिंहासन, प्रभुताएं, प्रधानताएं, अधिकार सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं। वह सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं। वही देह अर्थात कलीसिया का सिर है, वही आदि है, और मरे हुओं में से जी उठने वालों में से पहलौठा है ताकि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।

पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उसमें सारी परिपूर्णता निवास करे। उसके क्रूस पर बहे लहू के द्वारा मेल-मिलाप करके सब वस्तुओं का उसी के द्वारा अपने साथ मेलकर लें चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की। तुम पहले तो परमेश्वर से अलग किए हुए और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे, परन्तु मसीह ने अपनी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुमसे मेल कर लिया है कि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र, निष्कलंक और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे - यदि तुम विश्वास की नींव पर दृढ़ बने रहो, और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुमने सुना, न छोड़ो। (कुलुस्सियो 1:15-23)

सावधान रहो कि कोई उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा तुम्हारा शिकार न कर ले, जो मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा पर आधारित है, पर वह मसीह पर आधारित नहीं। क्योंकि यीशु में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह निवास करती है और तुम उन्हीं यीशु में परिपूर्ण किए गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार के शिरोमणि हैं। (कुलुस्सियो 2:8-9)

बिना ड्राईवर के अगर कार चले तो क्या हम उस कार में सवारी करना पसन्द करेंगे, कदापि नहीं, क्योंकि उस कार का क्या भरोसा कि वह हमें किस मोड़ पर ले जाकर हमारी जीवन लीला समाप्त कर दे। संत पौलुस भी यही कहना चाहते हैं, कि एक दिन मैं भी अपनी जीवन रूपी कार को बिना ड्राईवर के चला रहा था और प्रभु यीशु का विरोधी था, यीशु के लोगों को बहुत सताता था लेकिन जब यीशु ने मुझे अपने काम के लिए चुना तो मेरे जीवन की कार का ड्राईवर प्रभु यीशु हो गया। हमारे पिता परमेश्वर की ओर से सभी को अनुग्रह और शान्ति प्राप्त होती रहे। आमेन

— एस.बी. सैमुअल, केन्द्रीय विद्यालय, आगरा

धन्य कुँवारी मरियम का स्वर्गारोहण
(स्वर्गारोहण का महापर्व - 15 अगस्त)

Difference between a Guru and a Teacher...

It's so beautiful and nicely worded that just couldn't resist sharing it.

1. A teacher takes responsibility for your growth.
   A Guru makes you responsible for your growth.
2. A teacher gives you things you do not have and require.
   A Guru takes away things you have and do not require.
3. A teacher answers your questions.
   A Guru questions your answers.
4. A teacher requires obedience and discipline from the pupil.
   A Guru requires trust and humility from the pupil.
5. A teacher clothes you and prepares you for the outer journey.
   A Guru strips you naked and prepares you for the inner journey.
6. A teacher is a guide on the path.
   A Guru is a pointer to the way.
7. A teacher sends you on the road to success.
   A Guru sends you on the road to freedom.
8. A teacher explains the world and its nature to you.
   A Guru explains yourself and your nature to you.
9. A teacher gives you knowledge and boosts your ego.
   A Guru takes away your knowledge and punctures your ego.
10. A teacher instructs you.
    A Guru constructs you.
11. A teacher sharpens your mind.
    A Guru opens your mind.
12. A teacher reaches your mind.
    A Guru touches your spirit.
13. A teacher instructs you on how to solve problems.
    A Guru shows you how to resolve issues.
14. A teacher is a systematic thinker.
    A Guru is a lateral thinker.
15. One can always find a teacher.
    But a Guru has to find and accept you.
16. A teacher leads you by the hand.
    A Guru leads you by example.
17. When a teacher finishes with you, you celebrate.
    When a Guru finishes with you, life celebrates.

    Let us honor both, the teachers and the Guru in our lives...

    Happy Gurupurnima!!!

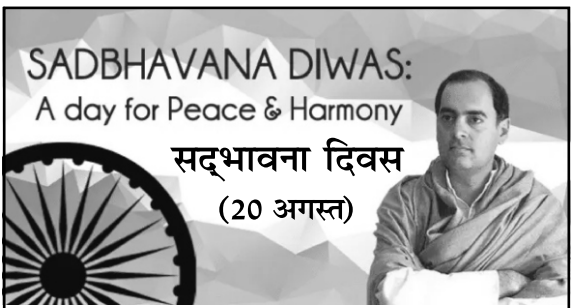

सद्भावना दिवस की प्रतिज्ञा

मैं, पूरी गंभीरतापूर्वक यह प्रतिज्ञा करता हूँ, कि मैं जाति, क्षेत्र, धर्म और भाषा के भेदभाव से ऊपर उठकर भारतवर्ष के सभी लोगों की भावनात्मक एकता और सद्भावना के लिए कार्य करूँगा।

मैं, यह भी प्रतिज्ञा करता हूँ, कि अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए, संवैधानिक साधनों और आपसी बातचीत द्वारा एक-दूसरे के बीच की दूरियों को समाप्त करने का सतत् प्रयास करूँगा।

संत जॉन मेरी वियान्नी

(1786 से 1849)

पर्व दिवसः 4 अगस्त

संत जॉन मेरी वियान्नी फ्रांस देश के एक उत्साहित एवं पवित्र पुरोहित थे। वे डायोसिसन यानी धर्मप्रांत के पुरोहितों के संरक्षक संत हैं। उनका पर्व 4 अगस्त को मनाया जाता है। वे पेरिस के लोगों से विशेषकर गरीब एवं बीमार लोगों से भेंट करने जाते थे। वे उनके लिए पवित्र साक्रामेन्ट के सामने कई कई घण्टे प्रार्थना में व्यतीत करते थे। वे उनके लिए त्याग-तपस्या करते थे। वे अपने जीवन से अच्छा उदाहरण देकर उनका मार्गदर्शन करते थे।

उनका जन्म सन 1786 ईस्वी में फ्रांस देश में हुआ था। जब वे मात्र 7 वर्ष के थे, तब उनके देश में गृहयुद्ध छिड़ गया जो 9 वर्षों तक जारी रहा। वहाँ की सरकार एक तरफ गरीबों तथा दूसरी तरफ धार्मिक संस्थानों, पुरोहितों एवं धर्म-बहनों को सताने लगी। वहाँ के पुरोहितों एवं धर्मबहनों ने बहुत साहस के साथ सभी चुनौतियों का सामना किया और अपने विश्वास में अटल बने रहे। उनके जीवन में संत जॉन मेरी वियान्नी बहुत प्रभावित हुए।

फ्रांस देश में अंदर और बाहर से भी खतरा था। इसी काल में 1799 ईस्वी में उस देश में नेपोलियन बोनापार्ट का उदय हुआ। वह फ्रांस रिपब्लिकन दल का नेता बना। वह अपनी सेना का सगंठन कर के बाहरी देशों से युद्ध करने लगा। यह पाँच वर्षों तक जारी रहा। जब संत जॉन मेरी वियान्नी किशोर अवस्था में पहुंचे तब उनको भी नेपोलियन के दल में घसीटा गया। वे किसी तरह इस चंगुल से निकलकर पुरोहित बनने का प्रशिक्षण पाने में संलग्न हो गए।

पुरोहित बनने के बाद उनको 1818 ई. में फ्रांस के आर्स नामक एक आंतरिक गांव (पल्ली) में भेजा गया। इनको वहाँ पहुँचने में बहुत कठिनाई हुई। रास्ते में कुछ लोगों ने उनकी हँसी भी उड़ाई। उस समय की, देश की बुरी राजनीतिक स्थिति के कारण, लोगों के नैतिक जीवन पर बुरा असर पड़ा। वहाँ के लोग प्रभु से, धर्म से दूर हो गए थे। वह दुनियादारी बन गए थे। वे रविवार को भी चर्च (गिरजाघर) नहीं जाते थे। उस दिन दिन वे मौज मस्ती और नृत्य में लिप्त रहते थे।

जॉन मेरी वियान्नी कुँवारी मरियम एवं संत फिलोमिना के भक्त थे। उनकी प्रार्थना से वहाँ चमत्कार हुआ। लोगों में परिवर्तन आया। लोग चर्च आने लगे और पाप स्वीकार करने लगे। लोगों का जीवन बदलने लगा। 1827 ई. में आर्स एक तीर्थ स्थान बन गया। यह एक मॉडल पैरिश बन गया। इन 9 वर्षों में वहाँ बहुत परिवर्तन हुआ। यहाँ 20 हजार लोग तीर्थयात्रा करने एवं पाप स्वीकार करने आए। फादर वियान्नी 14 से 18 घंटों तक लगातार पाप स्वीकार सुनते थे। फादर के पवित्र जीवन एवं चमत्कार की चर्चा चारों ओर होने लगी। 73 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु फ्रांस में हुई। 1925 ई. में संत पिता पायस 11वें ने उन्हें संत घोषित किया।

वे हम सब लोगों के लिए एक प्रेरणा एवं नमूना हैं। उनसे हमें निराशाजनक परिस्थिति में अपनी प्रार्थना, त्याग, तपस्या और ईश्वर में भरोसा रखकर जीतने की प्रेरणा मिलती है।

—सिस्टर नीलू सी.जे., नेपाल

Schola Brevis held at St. Francis Xavier's Regional Seminary, Etmadpur, Agra

St. Francis Xavier's Regional Seminary (Masih Vidyapeeth) reopened as usual on 1st July 2021 amidst the Covid-19 Pandemic. This was possible only due to the Divine assistance. All the students returned to their Alma Mater with full zeal and vigour after their summer vacations. The new academic year began for the students of Philosophical study with an annual retreat led by Rev. Fr. Joseph Rodrigues and Rev. Fr. Viniversal D'Souza of Agra Archdiocese.

On 12th July 2021 with immense joy and enthusiasm we commenced our new scholastic year 2021-2022. We began our day with a solemn Holy Eucharist presided over by Most Rev. Dr. Raphy Manjaly, Archbishop of Agra; concelebrated by our Parish Priest and members of the staff. During the homily Archbishop spoke about the working and power of the Holy Spirit in our lives. His Grace insisted on the need to be anointed with the gifts of the Holy Spirit, for we can do nothing without it. After the Holy Mass we proceeded to 'Pratibha Bhawan' for the Inauguration Ceremony.

The ceremony commenced with a prayer song by the seminary choir. The choir added melody to the event and enhanced the prayerful ambience. This was then followed by lighting of the lamp. A passage from the Holy Bible was read by Rev. Fr. Thomas Quadros (OFM Cap), followed by a short prayer.

After that Rev. Fr. Joseph Francis D'Souza, Rector in his message pronounced the new motto for this academic session i.e. "Be a blessing through communion with Christ and with one another"

It was then followed by Rev. Fr. V. J. Thomas, the Dean of Philosophy who addressed the student-body with an elaborative and effective

message. In his message he spoke of the new courses added and their relevance in our formation. He also exhorted the students to work hard this year too and excel in their studies.

Rev. Fr. Deelip Kumar, The Vice-Rector then informed the house about the year plans and events. He urged the staff and students to cooperte as earlier.

The Chairman Most Rev. Dr. Raphy Manjaly asked the students to cultivate beneficial habits and make the best use of all the opportunities available in the seminary. He said that while academic achievement is important a person should also grow in all other aspects of life as well. His Grace explained that priestly training is one of the longest trainings in the world. Hence, seminarians need to possess and grow in required qualities, such as integrity, service mindedness and stewardship.

Rev. Fr. Marian Lobo presented a paper on 'Laudato Si' an encyclical by Pope Francis. The ceremony concluded with the Vote of thanks.

Bro. Conrad Clifford Coelho (MVP)

New Comers' Day, Schola Brevis and Patron's Day celebrated in SLS

Agra, 21 July. St. Lawrence of Brindisi, our heavenly Patron's Feast Day was celebrated with great pomp and show in the Minor Seminary. It was also a day of New Comers (Benjamins) of our seminary. We celebrated the day as Schola Brevis (short school).

We began the day with the Holy Eucharist offered by His Grace Most Rev. Dr. Raphy Manjaly, our beloved Archbishop. Fathers from the seminary and neighboring parishes concelebrated in this Mass of the Holy Spirit. Rev. Sisters from neighbouring convents and our teachers also attended the Eucharist. The new comers' holding a lighted candle each entered the Chapel in a solemn procession. His Grace was welcomed with a traditional Tika, Aarti and garland. His Grace was extremely delighted, as it was his maiden visit to his Alma Mater. In his homily, he asked the students to listen to the prompting of the Holy Spirit.

After the Mass, we proceeded to the refectory, where we were felicitated with a wishing song. Then the festive cake was cut and everybody savored it.

This year due to Pandemic only five new comers had arrived to that day, so we postponed our photo session. 11 new comers have joined us till date. His Grace assured us that he would visit us soon. May St. Lawrence continue to watch over us and protect us.

Bro. Suman Toppo (House Beadle)

सेंट पैट्रिक्स चर्च, आगरा में ग्रैण्ड पेरेन्ट्स डे सेलिब्रेशन

25 जुलाई 2021 को सेंट पैट्रिक्स पल्ली, आगरा छावनी में ग्रैण्ड पेरेन्ट्स डे बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया।

सर्वप्रथम सभी ग्रैण्ड पेरेन्ट्स ने एक जुलूस के साथ गिरजाघर में प्रवेश किया एवं फूलों को प्रभु येसु की मूर्ति के समक्ष अर्पण किया। सभी ने मिस्सा बलिदान में पूरी भक्ति एवं श्रद्धा के साथ भाग लिया।

हमारे पल्ली पुरोहित फादर ग्रेगरी थरायल, फादर भास्कर जेसुराज, फादर शाजुन एवं मुख्य अतिथि फादर प्रकाश डिसूजा ने बड़े ही भक्तिभाव से मिस्सा बलिदान चढ़ाया। फादर प्रकाश ने अपने प्रवचन में हमारे वृद्धजनों की भूमिका के बारे में समझाया और उनका आदर-सम्मान करने के लिए हमें प्रेरित किया। उन्होंने वृद्धजनों को समाज की नींव बताया जिस पर आने वाले भविष्य के समाज की रचना की जा सकती है। सम्पूर्ण मिस्सा बलिदान में महिला मण्डल ने विशेष रूप से भाग लिया। सिस्टर लिज़ी मैथ्यू एवं सिस्टर विक्टोरिया एलेक्स ने सभी का उचित मार्गदर्शन किया। अंत में फादर भास्कर एवं फादर प्रकाश द्वारा सभी गैण्ड पेरेन्ट्स को सम्मानित किया।

डिम्पल मैसी, सेंट पैट्रिक्स चर्च, आगरा छावनी

संत अल्फोंसा विशिष्ट विद्यालय, आगरा में संत अल्फोंसा का पर्व दिवस मनाया गया

28 जुलाई 2021 को संत अल्फोंसा विशिष्ट विद्यालय में अल्फोंसा डे एवं विद्यालय की प्रधानाचार्या के पर्व के उपलक्ष्य में एक छोटे से कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम संत अल्फोन्सा की प्रतिमा के समक्ष फादर जेकब, फादर पायस फिलिप, प्रधानाचार्या सिस्टर अल्फो, श्रीमती रजनी और छात्र विन्सेन्ट ने दीप प्रज्ज्वलन किया। बच्चों ने फादर्स व सिस्टर का आरती व तालियों से स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन छात्र-छात्रा गौरव व दीया ने किया। अपनी सुन्दर प्रस्तुतियों से फादर्स व सिस्टर का मन मोह लिया। फादर जेकब ने सिस्टर को बधाई देते हुए कहा, कि ''सिस्टर अल्फो संत अल्फोन्सा से प्रेरणा पाकर बिशप स्वामी के सपनों को साकार करने में अपना योगदान दे रही हैं और इसमें वे सफल हो रही हैं।'' बच्चों ने सिस्टर के प्रति अपने भावों को अलग-अलग तरीकों से व्यक्त किया जिन्हें देखकर सिस्टर भाव विभोर हो उठीं। फादर पायस ने बच्चों की प्रतिभाओं को देखकर कहा, कि ''उड़ने के लिए पंखों की आवश्यकता नहीं होती बस हमारे हौंसले बुलन्द होने चाहिए, यह बात बच्चों ने आज प्रमाणित कर दी।''

बेबी दीया ने संत अल्फोन्सा की जीवनी के बारे में संक्षिप्त में बताया व संदेश दिया कि हमेशा हमें सभी परिस्थितियों में समान रहना चाहिए। अध्यापिका रजनी मदान ने अल्फोन्सा परिवार की ओर से सिस्टर को पर्व की बधाई देते हुए उनकी सहनशीलता, ऊर्जावान व स्वस्थ रहने की कामना की।

कार्यक्रम के अन्त में प्रधानाचार्या ने सभी टीचर व छात्रों का आभार प्रकट किया और दीया के संदेश पर ज़ोर देते हुए उसे अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया। कोरोना काल में टीचर्स के सहयोग की सराहना करते हुए कहा, कि ''प्रभु नें हमें इन बच्चों की सेवा करने का जो

अवसर दिया है, उसकी आशिष हम पर बनी रहे।'' इतने कम समय में अच्छे कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए धन्यवाद और प्रशंसा की। **—सि. लिलीमा एफ.सी.सी.**

सेंट फ्रांसिस प्रान्तीय गुरुकुल (मसीह विद्यापीठ) एत्मादपुर, आगरा में परिधान समारोह सम्पन्न

जुलाई 31, 2021 आध्यात्मिक साधना के छात्रों के लिए एक स्मरणीय दिवस था। उस दिन बड़े हर्षोल्लास के साथ परिधान समारोह का आयोजन हुआ। समारोह का शुभारम्भ यूखरिस्त बलिदान से हुआ। सर्वप्रथम आगरा महाधर्मप्रांत के महाधर्माध्यक्ष अति श्रद्धेय डॉ. राफी मंजलि, गुरुकुलाचार्य श्रद्धेय फादर जोसफ फ्रांसिस डिसूजा, पुरोहित जन एवं हाथों में दीपक लिए आध्यात्मिक साधना के सभी छात्रों ने जुलूस बनाकर प्रवेश गीत के साथ प्रार्थनालय में प्रवेश किया। तत्पश्चात वेदी के समक्ष आरती, दीया, माल्यार्पण द्वारा मुख्य अनुष्ठाता, सह अनुष्ठाता एवं उपस्थित पुरोहितों का स्वागत किया गया।

तदोपरांत महाधर्माध्यक्ष जी ने पुरोहितों के साथ मिलकर दर्शन शास्त्र एवं आध्यात्मिक साधना के छात्रों के लिये मिस्सा बलिदान चढ़ाया। शब्द समारोह के बाद गुरुकुलाचार्य ने परिधान ग्रहण करने वाले सभी छात्रों को एक-एक कर परिधान वितरित किये। महाधर्माध्यक्ष जी ने अपने प्रवचन में परिधान के महत्व को समझाते हुए एक नया जीवन जीने एवं ख्रीस्तीय सद्गुणों को अपनाने के लिए हमें प्रेरित किया, जिससे हम सभी ईश्वरीय प्रेम में बंधकर उत्साही मिशनरी बनने की तीव्र अभिलाषा रख सकें।

उसके बाद परिधान ग्रहण करने वाले छात्रों से महाधर्माध्यक्ष ने सम्बन्धित प्रश्न पूछे, फिर उन्हें शुद्धता, आज्ञाकारिता एवं दरिद्रता के मूल्यों का पालन करने की शपथ दिलाकर उन्हें आशीर्वाद दिया। मिस्सा के बाद बधाई गीत के साथ हमारे कनिष्ठ भाइयों को बधाई दी। अंत में स्वादिष्ट नाश्ते के साथ परिधान समारोह का समापन हुआ।

ब्रदर जॉन जोसेफ, (दर्शनशास्त्र, द्वितीय वर्ष)

प्रथम परमप्रसाद, दृढ़ीकरण तथा विदाई समारोह सम्पन्न

आगरा, 1 अगस्त। कथीड्रल चर्च, वजीरपुरा रोड, आगरा में प्रथम परमप्रसाद एवं दृढ़ीकरण संस्कार समारोह परम्परागत रूप से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कथीड्रल पल्ली के 19 बच्चों ने प्रथम परमप्रसाद तथा 32 विश्वासीजनों ने दृढ़ीकरण संस्कार ग्रहण किया।

''जीवन की रोटी मैं हूँ, जो मेरा माँस तथा रक्त ग्रहण नहीं करता उसमें जीवन नहीं है;'' प्रभु येसु के इन वचनों को महिमान्वित करते हुए सर्वप्रथम श्वेत परिधान में सजे-धजे हाथों में खूबसूरत मोमबत्तियाँ लिए संस्कार ग्रहण करने वाले विश्वासीजनों व बच्चों ने ''आते हैं हम तेरे द्वार पर भक्ति लिए स्वामी'' भजन के साथ भव्य जूलुस के रूप में प्रवेश किया और वेदी की ओर बढ़कर निर्धारित स्थान पर बैठ गए। पवित्र मिस्सा के मध्य संस्कार विधि-विधान पूर्वक सम्पन्न हुआ। बाइबिल से दो पाठ पढ़े गए। पाठ क्रमशः जेनिफर जोसफ व आयुष डेविड द्वारा पढ़े गए।

महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि ने अपने सारगर्भित संदेश में कहा- ''कलीसिया को प्रभु में अपने विश्वास में दृढ़ रहना चाहिए।'' दृढ़ीकरण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा- ''यह विश्वास प्रत्येक का व्यक्तिगत होना चाहिए, प्रभु सबके हैं, सब प्रभु के हैं। हमारा जीवन प्रभु वचनों को दर्शाने वाला होना चाहिए। संत पेत्रुस और सन्त योहन ने भी संस्कार लिया था। उन्होंने इसे यहूदियों के संस्कारों के अनुसार लिया था जिसमें अधिकार के साथ

कुछ जिम्मेदारियाँ भी थीं। आज हमें भी अपने विश्वास के साथ जिम्मेदारियों को भी समझना है।''

डॉ. राफी ने उदाहरण स्वरूप खूबसूरत घटना की चर्चा करते हुए बताया कि, ''एक बार एक सैनिक ने जब यह प्रथम परमप्रसाद संस्कार ग्रहण किया तो उसने इस दिन को यादगार बनाने के लिए किसी भव्य समारोह या दावत न करने का निर्णय लेते हुए गरीबों, लाचारों और भूखे लोगों की मदद करने का पवित्र कार्य किया और अपने जीवन में प्रभु को दर्शाया। जबकि आज अधिकांश लोग इस दिन को पार्टी, दावत, प्रीतिभोज करके यादगार मनाते हैं। हमें निर्णय लेना है कि हमें अपने विश्वास से प्रभु येसु की साक्षी दें।

हमारा जीवन आत्मा द्वारा संचालित हो। स्वयं को हमें प्रभु को सौंपना है। हम सब उसकी भेड़ें हैं वही हमारा चरवाहा है। जब जीवन की रोटी हमारे पास है तो हमें उसी से अपनी आत्मा तृप्त करनी है। दृढ़ विश्वास करने से ही प्रभु हमारे जीवन की रोटी बनेगा, जिसे आज आप ग्रहण करने जा रहे हो। आत्मिक पोषण के लिए यह संस्कार परम आवश्यक है।'' मिस्सा बलिदान प्रमुख याजक महाधर्माध्यक्ष ने फादर मिराण्डा, फादर अरुल, फादर लॉरेन्स व फादर एण्ड्रयू कोरिया सहित चढ़ाया। स्वागत तथा समारोह की रूपरेखा विस्तार से रोहिनी ने प्रस्तुत की।

पवित्र मिस्सा के पश्चात फादर अरुल कुमार लाजर को भावभीनी विदाई दी गई। फादर अरुल अब एटा पेरिश के पल्ली पुरोहित के रूप में पदभार ग्रहण करेंगे। विदाई पत्र श्रीमती वर्षा द्वारा पढ़ा गया। फादर विनिवर्सल तथा कोरल विल्सन ने कलीसिया का स्वागत किया।

प्रथम परमप्रसाद तथा दृढ़ीकरण संस्कार ग्रहण करने वाले सुपात्रों की शिक्षा-दीक्षा तथा उन्हें आत्मिक रूप से तैयार करने में श्रीमती सुमन व श्रीमती रोहिनी का विशेष योगदान रहा। इनके अथक परिश्रम से ही संस्कार समारोह सम्भव हो सका। भक्ति गीतों का संचालन गायन मंडली तथा सान दामियानो कॉनवेण्ट की धर्मबहनों ने किया। वेदी सज्जा तथा धर्मविधि की तैयारी में सिस्टर प्रिसिल्ला, सिस्टर लुसिल्ला तथा सिस्टर हेलेन का विशेष योगदान रहा। धन्यवाद ज्ञापन डॉमनिक विल्सन ने दिया। अन्त में संस्कार ग्रहण करने वाले सभी सुपात्रों का सामूहिक फोटो लिया गया। उन्हें स्वल्पाहार देकर बधाई दी गई।

—डॉ. मारथा शर्मा/श्रीमती रोहिनी, कथीड्रल पैरिश

संत अल्फोंसा विशिष्ट विद्यालय में आर्चबिशप डॉ. आल्बर्ट डिसूज़ा का जन्मदिवस मनाया गया

3 अगस्त 2021 को सेंट अल्फोंसा विद्यालय में आगरा महाधर्मप्रान्त के निवर्तमान महाधर्माध्यक्ष डॉ. आल्बर्ट डिसूजा का जन्मदिन बहुत धूमधाम से मनाया गया। विद्यार्थियों बेबी दिया, संध्या, मास्टर गौरव, अमन ने अपने अंदाज़ में जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं और डांस किया, जिसे देखकर स्वामी जी प्रफुल्लित हो उठे। सभी विद्यार्थियों ने बुके, कार्ड, फूल व अपने हाथों द्वारा बनाए गुलदस्ते देकर बधाई दी।

स्वामी जी ने बच्चों के साथ मिलकर केक काटा। स्वामी जी ने एक प्रेरणादायक कहानी सुनाकर संदेश दिया कि ''हमें विषम परिस्थितियों में भी प्रभु की स्तुति व धन्यवाद करते रहना चाहिये, जिससे हमारी परिस्थिति एक न एक दिन सम हो जाती है।''

कार्यक्रम का संचालन अध्यापक नीतिन पॉल व धन्यवाद अध्यापिका मीनू यादव ने किया। अन्त में स्वामी जी ने सभी को चॉकलेट देकर आशीर्वाद दिया।

रजनी मदान (अध्यापिका)

महाधर्माचार्य डॉ. आल्बर्ट डिसूज़ा 76 वर्ष के हुए

आगरा, 4 अगस्त। हमारे परम पूज्यनीय (निवर्तमान) महाधर्माचार्य डॉ. आल्बर्ट डिसूज़ा 4 अगस्त को 76 वर्ष के हो गए। इस अवसर पर प्रात: 6.30 बजे महागिरजाघर में दोनों महाधर्माचार्यों सहित बहुत से पुरोहितों ने संत जॉन मेरी वियान्नी के सम्मान में धन्यवाद का पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया। मिस्सा के दौरान महाधर्माचार्य डॉ. राफी मंजलि ने महाधर्माचार्य डॉ. आल्बर्ट डिसूजा के सम्मान में अति सुन्दर प्रवचन दिया। उन्होंने कहा कि महाधर्माचार्य का परिवार एक आदर्श परिवार है, जिसे प्रभु ने सर्वाधिक बुलाहटें देकर आशीषित किया है।

मिस्सा बलिदान के बाद सभी उपस्थितजनों ने हैप्पी बर्थडे गीत गाकर स्वामी जी का अभिनन्दन किया। मध्यान्ह निकटवर्ती सभी पुरोहितों ने 'महालंच' में भाग लिया।

दिन भर विभिन्न संस्थाओं व आयोगों के सदस्यों व अधिकारियों ने स्वामी जी को जन्मदिन की मुबारकबाद दी। सन्ध्या काल में सेट लॉरैन्स गुरुकुल के छात्रों, लीजन ऑफ मेरी की सदस्यों, केनरा बैंक की ब्रांच मैनेजर सुश्री अंजलि एवं सद्भावना समिति के सदस्यों ने महाधर्माचार्य जी को जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

—निर्मला जॉन एवं डेनिस सिल्वेरा

संत जूड पल्ली, कौलक्खा में नए पल्ली पुरोहित द्वारा पदभार ग्रहण

आगरा, 8 अगस्त। रविवार 8 ता. का दिन सेंट जूड पल्ली, कौलक्खा, आगरा के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जायेगा, जब पहली बार एक स्वतंत्र पल्ली पुरोहित की नियुक्ति की गई है। वह स्कूल के कार्यभार से मुक्त रहकर पल्ली एवं पल्लीवासियों के लिए नियुक्त किए गए हैं। अभी तक एक ही जन दोनों ज़िम्मेदारियों (स्कूल प्रधानाचार्य एवं पल्ली पुरोहित) को निबाह रहे थे।

पवित्र मिस्सा के दौरान हमारे नवनियुक्त पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर राफी वल्लाचिरा का हार्दिक स्वागत किया गया। मिस्सा के दौरान ही उन्हें गिरजाघर (प्रकोष्ठ) की कुंजी, एवं अन्य आवश्यक दस्तावेज सौंपे गए। इस अवसर पर उन्होंने प्रेरितों का धर्मसार प्रार्थना कही और पल्ली पुरोहित के पद के प्रति निष्ठा की शपथ ली। इस अवसर पर श्रद्धेय फादर इग्नेशियुस मिराण्डा व स्कूल प्रधानाचार्य फादर शिजु भी मौजूद थे।

मिस्सा के बाद नए पल्ली पुरोहित फादर राफी को पल्ली की विभिन्न इकाइयों/ संस्थाओं एवं संगठनों द्वारा सम्मानित कर उनका स्वागत किया गया।

फादर राफी कौलक्खा वासियों के लिए नए नहीं हैं। इससे पहले वे सेंट मेरीज़ चर्च, आगरा में पल्ली पुरोहित रह चुके हैं। उन्होंने पल्ली पुरोहित, प्रधानाचार्य एवं प्रबन्धक के रूप में कई स्थानों पर अपनी सेवाएं दी हैं। उन्होंने कई वर्षों तक मुस्लिम देशों में भी कार्य किया है। ऐसे अनुभवी पुरोहित को अपने पल्ली पुरोहित के रूप में पाकर हम सचमुच धन्य हो गए हैं। पल्लीवासियों को उनसे बहुत आशा है। **—अंजलीना मोसस, कौलक्खा**

Shepherd's Maiden Visit to Dholpur Parish

Our beloved Shepherd, Most Rev. Dr. Raphy Manjaly visited the parish of Our Lady of Pilar at Dholpur (Rajasthan) on 11th July 2021. He was accorded with a traditional welcome by the parishioners with aarti and tika. His Grace celebrated the Holy Eucharist. Fr. Joseph Pasala, Fr. Alfredo Rodrigues, Fr. Eusebio Gomes and Fr. Max Gonsalves were concelebrants. On the occasion of Pastoral Visitation His Grace conferred the Sacrament of Confirmation on four candidates namely Nishi David, Nishant David, Ajeet Joseph and Varghese John. After the Mass the Parish Priest, Fr. Alfredo presented the Report of the Parish activities. Then he handed over the certificates to the Archbishop to be given to the newly confirmed candidates.

Later, in the parish hall a felicitation program was organised in honour of His Grace as it was his maiden visit to St. Francis Xavier's Parish after taking over as the Archbishop of Agra. The parishioners felicitated the Archbishop with a hymn followed by a devotional dance by Nishi David and two instrumental pieces by Fr. Max Gonsalves and Fr. Alfredo Rodrigues based on the songs 'Yeh Sham Mastani' and 'Pyar Diwana Hota Hai' from the film 'Kati Patang.' His Grace in his speech said that there is so much joy in the small parish community of Dholpur and it is vibrant and united and blessed by the Lord. The program ended with an agape meal.

Fr. Eusebio Gomes SFX, Dholpur (Raj.)

Diaconate Ordination Ceremony held at St. Joseph's Church, G. Noida

Isa 49:1-7 "The Lord called me from birth, from my mother's womb He gave me my name."

25th July 2021, was one of the most blissful days for our Church when we, the parishioners witnessed a sacred and solemn occasion where Rev. Bro. Kulkant Chhinchani was ordained deacon.

The Ordination Ceremony took place at St. Joseph's Church, Greater Noida. The chief celebrant was Most Rev. Dr.RaphyManjaly, the Archbishop of Agra who conferred the Sacred Order of Diocanate through the imposition of hands and the invocation of the Holy Spirit. Br. Kulkant took the vow to dedicate his life for Christ in the presence of Rev. Fr. VinoyPulivelil, the parish priest, other priests, religious and parishioners.

Most Rev. Dr.RaphyManjaly explained the

duty of a Deacon in his homily. He described that Deacons could baptize; proclaim the Gospel; preach the homily; assist the Bishop or Priest in the celebration of the Eucharist; conduct funeral, assist and bless marriages. They also should dedicate themselves to charitable endeavours.

Deacon Kulkant expressed his gratitude at the end of the ceremony, to each and every one who have been always with him, motivating, supporting and inspiring him in his journey.

On behalf of the Parish Priest and the entire St. Joseph Church, Greater Noida Parish,we want to congratulate, Deacon Kulkant as he is ordained to do the service of the Lord and this confirms that he is in the mission of the Lord and the Lord wants to use him. We wish him all the best as he starts his new journey of ushering His people to the Kingdom of God.

"The Lord bless and keep you; the Lord make his face to shine upon you, and be gracious to you."

Mrs.Raji Andrews
St. Joseph's Church, G. Noida

होली फैमिली चर्च, टूण्डला में 'ग्राण्ड पेरेन्ट्स डे' बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

25 जुलाई, 2021 रविवार के दिन हमारे होली फैमिली चर्च, टूण्डला में ग्राण्ड पेरेन्ट्स डे मनाया गया। संत पापा फ्रांसिस ने इस विषय में कहा है– ''मैं सदा आपके साथ हूँ। संपूर्ण कलीसिया आपके साथ है, आपकी चिन्ता करती है, प्रेम करती है और आपको अकेला नहीं छोड़ना चाहती'', उनके इन्हीं शब्दों से प्रेरणा लेते हुए यह पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। अपने बच्चों में अच्छे संसार तथा अच्छी परवरिश के लिए आवश्यक हैं। हम भी अपने घर के बुजुगों को आदर, सम्मान व प्यार दें, क्योंकि बच्चे हमें देखकर ही सीखते हैं।''

''हमारे बुजुर्ग घर के स्तम्भ की तरह होते हैं, जिन पर परिवार की नींव टिकी होती है।'' सर्वप्रथम चर्च में बुजुर्गों का सम्मान करते हुए उनकी आरती उतारी गई। मोमबत्ती जलाकर जुलूस के रूप में चर्च में भीतर लाया गया। तब सभी मोमबत्तियों को पवित्र वेदी पर रख दिया गया। श्रीमती जास्मीन तथा श्री मैथ्यु अब्राहम द्वारा क्रमशः पहला व दूसरा पाठ पढ़ा गया।

पल्ली पुरोहित फादर जिप्सन पालाट्टी तथा सहायक पल्ली पुरोहित फादर टोनी अल्मेडा द्वारा पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया गया तथा ग्राण्ड पेरेन्ट्स के अच्छे स्वास्थ्य व सुखी जीवन के लिए विशेष प्रार्थनाएं की गईं।

मिस्सा बलिदान के बाद ग्राण्ड पेरेन्ट्स के सम्मान में एक छोटा–सा अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्रद्धेय फादर जिप्सन तथा फादर टोनी द्वारा सभी ग्रैण्ड पेरेन्ट्स को शॉलें भेंट की गईं। उनके प्रति सम्मान व्यक्त किया गया। युवाओं ने बुजुर्गों के वचनों को सुनकर उनसे प्रेरणा ली। सभी ने अपने अनुभवों को बाँटते हुए युवाओं का मार्गदर्शन किया। अभिनन्दन कार्यक्रम के बाद जलपान की व्यवस्था की गई थी।

क्रिस्टीना विलियम, होली फैमिली चर्च, टूण्डला

सेंट फिदेलिस चर्च, अलीगढ़ में अभिनन्दन और विदाई समारोह

अलीगढ़। पहली अगस्त का दिन हमारी सेंट फिदेलिस पल्ली के लिए मिली जुली भावनाओं के समन्वय का दिन था। एक ओर बिछड़ने का गम था तो दूसरी ओर आगमन का आनन्द। तीन नई सिस्टर सुपीरियर्स तथा पांच धर्मबहनें हमारी पल्ली से जुड़ीं तो उसी प्रकार हमारी

पल्ली से तीन पुरोहितों का स्थानांतरण हुआ, जिनके नाम हैं– श्रद्धेय फादर सन्नी कोट्टूर, श्रद्धेय फादर जैमिल्टन एवं श्रद्धेय फादर जूड मरिया एन्थोनी।

कार्यक्रम की शुरुआत मिस्सा बलिदान से हुई जिसे फादर सनी, फादर जूड, फादर जैमिल्टन, फादर सुरेश, फादर आल्विन एवं फादर जॉन रोशन ने चढ़ाया। मिस्सा का केन्द्र बिन्दु रहा विदाई का ग़म। सभी पुरोहितों के आगामी गंतव्य के लिए विशेष प्रार्थना की। मिस्सा के बाद सभी नई सिस्टर्स का स्वागत एक–एक पौधा देकर किया गया। तीनों फादर्स को भी पौधे और पल्ली की तरफ से उपहार दिये गये। अपने संदेश में तीनों पुरोहितों ने अलीगढ़ में बिताए समय और खट्टी मीठी यादें सभी के साथ साझा कीं। गायन मण्डली द्वारा बहुत ही भावनात्मक विदाई गीत गाया गया। इस छोटे से कार्यक्रम का समापन पल्ली के प्रांगण में कॉफी के साथ किया गया। **—फादर जॉन रोशन परेरा**

Sesquicentennial Jubilee celebration of fsma Foundation

"O come, let us sing for joy to the Lord; let us shout joyfully to the rock of our salvation; let us come before His presence with thanksgiving".

2nd of August 2021 was a historic and joyous day for the Franciscans of St. Mary of the Angels as sesquicentennial bells rang out their joyous melody. Yes! It was on this very day in 1871 the birth of the Franciscans of St. Mary of the Angels, took place in Angers, in France. The long search of God's plan for our Mother foundress, Mother Mary Chrysostom of the Cross, was revealed through the instrumentality of Msgr. Freppel and our founder Rev. Fr. Chrysostom OFM.Cap. The theme for our Sesquicentennial Jubilee Year is - "Fulfilling and Shaping Mission Anew" (FSMA)

St. Mary of the Angels is the name of a little chapel in Assisi, Italy, also known as the Portiuncula (a little portion) dedicated to the Blessed Virgin Mary. There is a legend that the people of the surroundings used to hear the chorus of Angels at night. Hence this chapel came to be known as "St. Mary of the Angels." This little chapel became the favourite centre of prayer for Francis and it was here the Saint heard the call to leave everything to follow his Master. This chapel became the cradle to the Franciscan Order. Hence very dear to our Founder, who chose this name for our Congregation. August 2 is also the feast of Portiuncula chapel in Italy.

To mark this event we the community of Our Lady of Fatima, had a solemn Eucharistic celebration presided over by Rev. Fr. Sunny Kottoor, the Dean of Aligarh, concelebrated by Rev. Fr. John Roshan Pereira, the parish priest and other preists of St. Fidelis Church, Aligarh.

As we thank the Lord for His countless blessings. Let us ask the Lord to renew our lives so that we may go back to the origin and roots of our Foundress so as to re- dedicate our lives to Christ in the service of humanity with renewed vigour and enthusiasm. **-Sr. Jeril, FSMA**

Schola Brevis held in St. Joseph's Regional Seminary, Prayagraj

The Academic Year 2021 of the St. Joseph's Regional Seminary was officially inaugurated with the Schola Brevis on 9th July 2021. The Mass of the Holy Spirit was offered by Most Rev. Raphy Manjaly, the Archbishop of Agra, along with the new Rector Rev. Fr. Wilfred Moras and staff members in the Seminary Chapel. During the Mass there was the Rite of Admission to Diaconate for 9 brothers who were found worthy candidates for the Sacred Order of Diaconate. During the homily the prelate exhorted the Brothers to invoke the Holy Spirit every day and continually warp themselves with the virtues and gifts of the Holy Spirit. Later Schola Brevis ceremony was held at Angelopoly, Conference Hall of the seminary. The Archbishop presided over the gathering, Rev. Fr. Pius Thekemury, SJ from Shanti Sadan, Jesuit Formation House, Allahabad, was the key note speaker. The Rector in his annual address, presented the Report of the previous year's activities and exhibited the Vision, Mission and Formation program for future priests in North India. The guest speaker in his key note address displayed the symphony of holistic spirituality where, the life of Christ is lived in the life of each individual faithful. The Archbishop congratulated the staff and students for all the achievements and wished that the seminary forms, dynamic priests for the Church in North India.

His Grace expounded the mystery of holistic spirituality as a pre-condition for a seminarian, soon to be priest. The Dean of Studies Rev. Fr. Leo Tolstoy proposed the vote of thanks and distributed the annual hand book to the Brothers. The ceremony concluded with the seminary anthem ''भारत तेरे पुत्र बनेंगे तेरी मुक्ति के वाहक''

Bro. Ashish, SJRS, Allahabad

Whatever you did to the least of my...

Agra, 15 June. Once again Christian Samaj Seva Society (Reg.) came forward to support and help our poor and needy families of St. Mary's Church, Agra.

The lockdown and Corona virus really broke the lives of many people. The people are still are suffering and facing financial and other various types of difficulties in their daily lives.

Our Society helped these families with some food and essential commodities i.e. 10 kg (each) atta & rice, 5 kg. (each) daal and sugar, 1 kg. vegetable oil and garam masala to each family.

Present Pandemic period has been a testing time for all us. May the Lord help us to listen His words and respond to it- "When I was hungry..." **-Rowena Silvera, CSSS, Agra**

पारिवारिक बाईबिल प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता-2 अगस्त 2021 (परिणाम)

आगरा महाधर्मप्रांत के महाधर्मप्रांतीय पास्ट्रल सेण्टर एवं बाइबिल कमीशन, आगरा की ओर से 'संत यूसुफ' को समर्पित इस वर्ष में प्रेरित चरित और संत पौलुस के पत्रों पर आधारित पारिवारिक बाईबिल प्रश्नोत्तरी-2 आयोजित की गयी, जिसका परिणाम बहुत संतोषजनक रहा। लोगों ने लॉकडाउन का भरपूर लाभ उठाते हुए इसमें तन-मन से भाग लिया।

पास्टरल सेण्टर के डायरेक्टर एवं रोम से कलीसियाई कानून में डॉक्ट्रेट डिग्री प्राप्त कर स्वदेश लौटे फादर (डॉ.) संतोष डीसा ने कड़ी मेहनत कर बाईबिल प्रश्नोत्तरी तैयार की। प्रश्नों को एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित कर हरेक पल्ली व मिशन स्टेशन में पहुँचाया। प्रश्नोत्तरी में कुल 610 प्रश्न थे। हमारे दर्शनशास्त्र व ईशशास्त्र तथा सेंट लॉरेन्स सेमीनेरी के छात्रों के साथ-साथ फादर जॉन रोशन एवं फादर संतोष ने इन्हें विभिन्न वर्गों में विभाजित करने व जांचने का मुश्किल काम किया।

प्रतियोगिता काफी कठिन थी, फिर भी जांच करने के बाद निम्न प्रतिभागी प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे। कांटे की टक्कर थी, इसलिए कई बार लॉटरी डालकर भी परिणाम निकाले गये, जो इस प्रकार हैं-

टीम अग्रेडियन्स की ओर से सभी विजयी प्रतिभागियों को हार्दिक बधाई।

लोकधर्मी (विश्वासीगण) **अंक**

प्रथम

1. हेमा, भरतपुर 609
2. एन्सी कुरियन, अलीगढ़ 609

द्वितीय

1. राजेश डेविड, फिरोजाबाद 608

तृतीय

1. टॉम के. मैथ्यु, अलीगढ़ 606
2. अनुष्का थॉमस, सिकन्दरा, आगरा 606

सांत्वना पुरस्कार

1. करिश्मा, हाथरस 605
2. स्टीफन एलेक्जाण्डर, कथीड्रल, आगरा 604
3. निशा, ग्रेटर नोएडा 604
4. अरुण जॉन, सेंट पैट्रिक्स, आगरा कैंट 604
5. जेम्स फ्रांक एण्ड फैमिली, सिकन्दरा 604
6. अनीता लॉरेन्स, सिकन्दरा 603
7. दीपिका, डेल्टा 1, ग्रेटर नोएडा 600
8. सोनाली थॉमस, सेंट पैट्रिक्स, आगरा 600
9. जेम्स बारा, कथीड्रल, आगरा 599
10. सन्नी विलियम, टूण्डला 598
11. करूणा मसीह, सेंट जूड, कौलक्खा 597
12. सुमरानी लाकरा, ग्रेटर नोएडा 597
13. निधि होरो, अलीगढ़ 597
14. बीनू थॉमस, सिकन्दरा, आगरा 597
15. भुवनेश्वर टोप्पो, सिकन्दरा, आगरा 597
16. नीतू वुडवर्ड, टूण्डला 596
17. दिलीप टेटे, ग्रेटर नोएडा 596
18. सुखवीर सिंह, भीमनगर 596

धर्मसंघी वर्ग

प्रथम - फादर लुईस खेस, सेंट मेरीज़, आगरा 606
द्वितीय - ब्र. पप्पू जेम्स, मसीह विद्यापीठ 604
तृतीय - ब्र. बेनसन, मसीह विद्यापीठ 603
- ब्र. अभिषेक गिल, मसीह विद्यापीठ 603
- सि. बेनी (एफ सी सी), एटा 603

सांत्वना पुरस्कार (तीन)

1. फादर अरुण लसरादो, जैत (मथुरा) 601
2. ब्र. आकाशदीप लाकरा, मसीह विद्यापीठ 601
3. सि. एम्ब्रोसिया, (एम सी), सेंट मेरीज़ चर्च 600

विजयी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं!!!

पारिवारिक बाईबिल प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता-2 अगस्त 2021 (उत्तर)

1. प्रेरितों 14:4 ★ 2. ताबिया 9:36 ★ 3. राजा हेरोद 13:1 ★ 4. हर्रान, मेसोपोतामिया 7:2 ★ 5. पापों की क्षमा मिलेगी 10:43 ★ 6. ज्यूस, हेरमेस 14:12 ★ 7. किसी 9:7 ★ 8. हृदय शुद्ध 15:9 ★ 9. वितरण, विधवाओं 6:1 ★ 10. यहूदियों के सभागृहों 13:5 ★ 11. कुलपतियों, यूसुफ 7:9 ★ 12. तीन 10:16 ★ 13. यासोन 17:5 ★ 14. कनान 7:11 ★ 15. कुप्रुस 15:39 ★ 16. राजा, बेनयामीनवंशी कीस, साउल 13:21 ★ 17. मूल पुरुष 17:26 ★ 18. बल 9:19 ★ 19. बलि चढ़ाने 14:18 ★ 20. फिलिप्पी 16:12 ★ 21. अशुद्ध 10:28 ★ 22. आत्मा 16:6

लघु उत्तरीय: 23. चार सौ वर्ष 7:6 ★ 24. जादूगर 13:6 ★ 25. साऊल 9:11 ★ 26. सिकन्दरिया 18:24 ★ 27. इटालियन 10:1 ★ 28. याकूब 7:8 ★ 29. एक वर्ष 11:26 ★ 30. नबी 15:32 ★ 31. स्तेफनुस का हत्या 8:1 ★ 32. रोम 16:38 ★ 33. तरसुस 11:25 ★ 34. यूसुफ 4:36 ★ 35. मरियम 12:12 ★ 36. तिमथी 16:1 ★ 37. आठ 9:33 ★ 38. तीन 5:7 ★ 39. अपोल्लोस 18:24 ★ 40. दिव्य दर्शन में एक मकेदूनी 16:9 ★ 41. जैतून 1:12 ★ 42. अंतखिया 11:26 ★ 43. शेखेम में एम्मोर के पुत्रो 8:17 ★ 44. विश्वासियों 4:32 ★ 45. न्यायकर्ता 16:39 ★ 46. निकोलास 6:5 ★ 47. अपनी पत्नी सफीरा 5:1 ★ 48. रोदे नामक नौकरानी 12:14 ★ 49. मूसा 7:29 ★ 50. योहन 13:24 ★ 51. सिमोन 8:23 ★ 52. रक्त का खेत 1:19 ★ 53. सुन्दर 3:2 ★ 54. स्तोत्र-2: 7 13:33 ★ 55. जो व्यक्ति अपदूत के वश में था 19:16 ★ 56. प्रेरितों 5:12 ★ 57. सिमोन 9:43 ★ 58. स्वर्गदूत 3:35 ★ 59. पोन्तुस 18:1

किसने -किससे कहा: 60. स्वर्ग से वाणी पेत्रुस से कहा 11:9 ★ 61. प्रधानयाजक ने स्तेफनुस से 7:1 ★ 62. करनेलियुस ने स्वर्ग दूत से 10:4 ★ 63. पेत्रुस ने जादूगर सिमोन से 8:20 ★ 64. पेत्रुस ने करनेलियुस से 10:26 ★ 65. अनानीयस ने प्रभु से 9:10 ★ 66. यहूदी विश्वासीयों ने पेत्रुस से 11:3 ★ 67. आत्मा ने फिलिप से 8:35 ★ 68. प्रभु का दूत ने पेत्रुस से 12:8 ★ 69. फेलिक्स ने पौलुस से 24:25 ★ 70. पौलुस ने लुस्त्रा के लँगडे से 16:28 ★ 71. पौलुस ने भविष्यवक्ता अपदूत से 16:18 ★ 72. पवित्र आत्मा ने अंतखिया के नबी और शिक्षकों से (बरनाबस, सिमेयोन, मनाहेन) 13:2 ★ 73. पौलुस ने कारापाल से 16:28 ★ 74. पौलुस ने यहूदियों से 18:6 ★ 75. यहूदियों ने महायाजकों तथा नेताओ से 23:14 ★ 76. पौलुस ने कैसरिया के लोगों से 21:13 ★ 77. पौलुस ने फेस्तुस से 25:11 ★ 78. पौलुस ने बरयेसु से 13:11 ★ 79. लोगों ने पौलुस से 22:22 ★ 80. पौलुस ने एफेसुस के यहुदियों से ★ 81. पौलुस ने शतपति और सैनिकों से 27:31

वाक्य सही: 82. जलती हुई कँटीली झाड़ी की ज्वाला में एक स्वर्गदूत दिखाई पड़ा 7:30 ★ 83. उसने चालीस बरस तक मरुभूमि में उनकी देखभाल की 13:18 ★ 84. .....(मसीह के जगह पर) मुक्तिदाता अर्थात 13:23 ★ 85. .....(पुत्र के जगह पर) कृपापात्र बन जाता है। 10:35 ★ 86. अब मुझे.....मुझ (साऊल के जगह पर) हेरोद के... 12:11 ★ 87. उसके शरीर में कीड़े पड़ गये और वह मर गया 12:23 ★ 88. (पेत्रुस के जगह पर) पवित्र आत्मा को 15:28 ★ 89. उन्होंने यासोन और दूसरों से जमानत ली और उन्हें जाने दिया। 17:9 ★ 90. ईश्वर ने.....(मुक्ति के जगह पर) जीवन प्राप्त करें। 11:18 ★ 91. जब तक कोई मुझे न समझाये, तो मैं कैसे समझूँगा 8:31

अध्याय और पद संख्या: 92. 12:22 ★ 93. 10:34 ★ 94. 15:11 ★ 95. 19:2 ★ 96. 7:59 ★ 97. 23:11 ★ 98. 18:9 ★ 99. 26:16 ★ 100. 20:24

रोमियों के नाम पत्र: 101. ईश्वर 1:1 ★ 102. मुक्ति का स्तोत्र 1:16 ★ 103. अक्षम्य 2:1 ★ 104. धार्मिक 2:13 ★ 105. अनुग्रह तथा शान्ति 1:7 ★ 106. प्रकोप 4:15 ★ 107. विश्वास, कृपा 4:16 ★ 108. एक सौ 4:19 ★ 109. विधर्मियों 5:8 ★ 110. सामर्थ्य 1:16 ★ 111. धर्मग्रन्थ 2:24 ★ 112. हृदय, आध्यात्मिक 2:19 ★ 113. यहूदियों 3:2 ★ 114. सत्यप्रतिज्ञ 3:4 ★ 115. पाप 3:9 ★ 116. गला 3:13 ★ 117. संहिता 3:20 ★ 118. ईश्वर की महिमा 3.23 ★ 119. पवित्र आत्मा 1:4 ★ 120. विश्वास 1:8 ★ 121. आध्यात्मिक 1:11 ★ 122. न्यायप्रियता 3:25 ★ 123. धार्मिक 4:3 ★ 124. अनुग्रह, अधिकार 4:4 ★ 125. पाप का लेख 5:13★ 126. मृत्यु 5:21 ★ 127. मृत्यु का बपतिस्मा 6:3 ★ 128. पश्चाताप 2:4 ★ 129. संहिता 7:7 ★ 130. निर्जीव 7:8 ★ 131. आज्ञा 7:9 ★ 132. पाप 8:3 ★ 133. प्रतिकूल 8:7 ★ 134. कर्मो 2:6 ★ 135. पक्षपात 2:11 ★ 136. गुप्त 2:16 ★ 137. यहूदी 2:17 ★ 138. मर, पाप की गुलाम 6:7 ★ 139. संहिता, अनुग्रह 6:14 ★ 140. धार्मिकता 6:16 ★ 141. जीवित 7:1 ★ 142. ईश्वर के पुत्र 8:15 ★ 143. आत्मा 8:16 ★ 144. आत्मा 8:26 ★ 145. विश्वास, जीवन 1:17 ★ 146. घृणित वासनाओं 1:24 ★ 147. सन्तों 8:27 ★ 148. (धर्मग्रन्थ) 8:36 ★ 149. मूसा 9:15 ★ 150. कर्मकाण्ड 9:32 ★ 151. ईश्वर, ज्ञान 11:33 ★ 152. अध्यक्ष, परोपकारक 12:8 ★ 153. ठोकर के पत्थर 9:33 ★ 154. विवेकपूर्ण 10:2 ★ 155. मूसा 10:5 ★ 156. दुहाई 10:12 ★ 157. इसायस 10:16 ★ 158. बेनयामीन 11:1 ★ 159. सात हजार 11:4 ★ 160. अवशेष 11:5 ★ 161. डालियाँ 11:16 ★ 162. सावधान 11: 20 ★ 163. वरदान, बुलावा 11:25 ★ 164. सत्यप्रतिज्ञता 1:17 ★ 165. आशा 12:12 ★ 166. संहिता 13:8 ★ 167. अमरता की 14:11 ★ 168. पाप 14:23 ★ 169. इल्लुरिकुम 15:19 ★ 170. स्पेन 15:24 ★ 171. दाऊद 11:9 ★ 172. औचित्य 12:3 ★ 173. मकेदूनिया और अख़ैया 15:25 ★ 174. केंखेयै, फेबे 16:1 ★ 175. सर्वश्रेष्ठ 9:5 ★ 176. रेबेक्का 9:10 ★ 177. एपैनेतुस 16:5 ★ 178. अन्द्रोनिकुस और यूनियास 16:7 ★ 179. तेरतियुस 16:22 ★ 180. एरास्तुस और भाई क्वार्तुस 16:23 ★ 181. धैर्य तथा सान्त्वना 15:5 ★ 182. दयालुता और कठोरता 11:22 ★ 183. रेबेक्का 9:11 ★ 184. धर्मग्रन्थ- फिराउन से 9:17 ★ 185. इसायस 10:16

अध्याय और पद संख्या: 186. 8:31 ★ 187. 10:8★ 188. 9:33 ★ 189. 14:17 ★ 190. 10:13 ★ 191. 16:25-26/8:5-6 ★ 192. 10:17 ★ 193. 8:35 ★ 194. 10:10

कुरिन्थियो के नाम पहला पत्र: 195. सोस्थेनेस 1:1 ★ 196. भोजन 8:8 197. 11:26 ★ 198. 9:16 ★ 199. खलोए 1:11 ★ 200. कैफस, बारहों 15:5 ★ 201. रंगभूमि 4:9 ★ 202. मूर्खता 1:18 ★ 203. ईश्वर के आत्मा 2:11 ★ 204. खेती, भवन 3:9 ★ 205. व्यभिचार 6:18 ★ 206. मृत्यु 15:26 ★ 207. सत्यप्रतिज्ञ 1:9 ★ 208. कारिन्दा 4:1 ★ 209. दण्डाज्ञा 11:29 ★ 210. कार्यो 4:20 ★ 211. महिमा 6:20 ★ 212. कुँवारियों 7:25 ★ 213. घमण्डी 8:1 ★ 214. क्रिस्पुस और गायुस 1:14 ★ 215. कोलाहल 14:33 ★ 216. तेईस हजार 10:8 ★ 217. हितकर 6:12 ★ 218. 3:16 ★ 219. पाप 10:32 ★ 220. गलत 1:22 ★ 221. प्रेम का अभाव 13:1 ★ 222. न्यायकर्ता 4:4 ★ 223. प्रेम 13:13 ★ 224. भ्रातृप्रेम 14:1 ★ 225. शान्ति का जीवन 7:15 ★ 226. बाँसुरी, वीणा, तुरही 14:7-8 ★ 227. पाँच 14:19 ★ 228. सोच-विचार 14:20 ★ 229. स्तेफनुस 1:16 ★ 230. विश्वास 15:17 ★ 231. धर्मग्रन्थ की मर्यादा 4:6 ★ 232. हाँ 15:37 ★ 233. जीवन्तदायक 15:45 ★ 234. चतुराई 3:19 ★ 235. पाप 15:55 ★ 236. मकेदूनिया

16:5 ★ 237. पेन्तेकोस्त 16:8 ★ 238. अपोल्लोस 16:2 ★ 239. मनोभाव 2:16

कुरिन्थियो के नाम दूसरा पत्र: 240. प्रार्थना 1:11 ★ 241. यहूदियों, पाँच 11:24 ★ 242. आमेन 1:20 ★ 243. क्षमा और सान्त्वना 2:7 ★ 244. त्रोआस 2:12 ★ 245. ईश्वर 3:4 ★ 246. वचन 4:2 ★ 247. ईश्वर 4:6 ★ 248. तीतुस 7:13 ★ 249. पाप 5:21 ★ 250. तीतुस को नही पाने के कारण 2:13 ★ 251. आत्मा का (चिरस्थायी) 3:8 ★ 252. धार्मिकता 6:6 ★ 253. मनमाना अधिकार 1:24 ★ 254. अविश्वासियों 6:14 ★ 255. मकेदूनिया 7:5 ★ 256. मृत्यु 7:10 ★ 257. कुतर्को और घमण्ड 10:4 ★ 258. स्वतन्त्रता 3:17 ★ 259. चन्दा 8:12 ★ 260. दान 9:12 ★ 261. दुर्बलताओं 12:5 ★ 262. परित्यक्त 4:9 ★ 263. असाधारण 12:7 ★ 264. ऑखो-देखी 5:7 ★ 265. तीसरी 12:14 ★ 266. मूसा 3:13 ★ 267. ईश्वर 1:18 ★ 268. अनिर्वचनीय 9:15 ★ 269. शैतान 11:14 ★ 270. गर्व से 10:13

एक वाक्य में: 271. प्रभु ईसा मसीह का पिता 1:3 ★ 272. प्रत्येक विवेकशील मनुष्य 10:4 ★ 273. ईश्वर 1:10 ★ 274. ईसा मसीह 1:19 ★ 275. संसार के दु:ख 7:10 ★ 276. शैतान 2:11 ★ 277. ईश्वर 11:2 ★ 278. सुगन्ध 2:16 ★ 279. मृत्यु 4:12 ★ 280. संघर्ष के अस्त्र-शस्त्र में 10:45 ★ 281. प्राणदण्ड 3:7 ★ 282. धर्मग्रन्थ 4:13 ★ 283. भलाई हो या बुराई 5:10 ★ 284. मसीह 2:10 ★ 285. पृथ्वी पर हमारा घर 5:1 ★ 286. सॉप 11:3 ★ 287. अक्षर 3:6 ★ 288. ज्ञान 11:6 ★ 289. प्रेरितों 5:18 ★ 290. कुरिन्थियों 6:12 ★ 291. ईश्वर 7:6 ★ 292. जो विनाश के मार्ग पर चलते है 4:3 ★ 293. प्रभु और मनुष्य 8:21 ★ 294. प्रसन्नता से देने वालों 9:7 ★ 295. तीन 11:25 ★ 296. अविश्वासी या शैतान 6:15 ★ 297. राजा अरेतास के राज्यपाल 11:32 ★ 298. तीन 12:8 ★ 299. एशिया 1:8 ★ 300. अनदेखी चीजें 4:18 ★ 301. दुर्बल मनुष्य 10:3

अध्याय और पद संख्या: 302. 10:17 ★ 303. 3:5 ★ 304. 4:4 ★ 305. 5:9 ★ 306. 9:6 ★ 307. 8:9★ 308. 4:7

गलातियों के नाम पत्र: 309. अभिषप्त 1:9 ★ 310. निरीक्षक 3:25 ★ 311. अरब, दमिष्क 1:17 ★ 312. विरोधी 5:16 ★ 313. 15 दिन 1:18 ★ 314. आब्बा पिता 4:6 ★ 315. सीरिया और किलिकिया 1:21 ★ 316. चैदह, बरनाबस 2:1 ★ 317. 1:15 ★ 318. तीतुस 2:1 ★ 319. इब्राहीम 3:6 ★ 320. पेत्रुस 2:7 ★ 321. याकूब, केफस और योहन 2:9 ★ 322. अन्ताखिया 2:11 ★ 323. बरनाबस 2:13 ★ 324. पापमुक्त 2:16 ★ 325. 2:20 ★ 326. अनुग्रह 2:21 ★ 327. नासमझ 3:1 ★ 328. विश्वास 3:7 ★ 329. शाप 3:10 ★ 330. धार्मिक 3:11 ★ 331. आध्यात्मिक 6:1 ★ 332. धारण 3:27 ★ 333. उत्तराधिकारी 3:29 ★ 334. यूनानी 2:3 ★ 335. दासता, स्वतन्त्रता 4:21 ★ 336. हागार 4:25 ★ 337. आज्ञा 5:14 ★ 338. याकूब 1:19 ★ 339. 9 5:22-23 ★ 340. 6:7 341. ईसा 6:17 ★ 342. तीन, केफस 1:18 ★ 343. सन्तति 3:26

एफेसियो के नाम पत्र: 344. दतक पुत्र 1:5 ★ 345. पुराना स्वभाव 4:22 ★ 346. प्रज्ञा तथा आध्यात्मिक 1:15 ★ 347. दयालु 4:32 ★ 348. पापों 2:1 ★ 349. जड़े गहरी हो 3:17 ★ 350. अन्धकार 4:18 ★ 351. अपराधों की क्षमा 1:7 ★ 352. शैतान 4:27 ★ 353. आध्यात्मिक 2:22 ★ 354. आलोकित 5:14 ★ 355. कोप 2:3

अध्याय और पद संख्या: 356. 4:28 ★ 357. 5:11★ 358. 6:11 ★ 359. 3:11 ★ 360. 4:7

एक वाक्य में: 361. ईश्वर 1:11 ★ 362. मुक्ति के दिन 4:30 ★ 363. आकाश में विचरने वाले अपदूतों के नायक 2:2 ★ 364. ईश्वर 2:4 ★ 365. ईश्वर 4:6 ★ 366. सत्य 4:15 ★ 367. यहूदियों-गैर यहूदियों 2:14 ★ 368. गैर-यहूदियों 3:1 ★ 369. पिता 3:15 ★ 370. मसीह 4:15 ★ 371. गैर-यहूदियों 4:17 ★ 372. पाप 4:26 ★ 373. यहूदियों-गैर यहूदियों 3:6 ★ 374. प्रत्येक मनुश्य जो भलाई करेगा 6:8 ★ 375. कलीसिया 1:23

फिलिप्पियों के नाम पत्र: 376. 1:21 ★ 377. 2:21 ★ 378. 4:4 ★ 379. 2:4 ★ 380. 3:8 ★ 381. 3:20

खाली स्थान: 382. बल 1:14 ★ 383. दलबन्दी 2:3 ★ 384. अत्याचार 3:6 ★ 385. सुसमाचार 1:27 ★ 386. भुनभुनाये 2:14 ★ 387. सहायता 4:13 ★ एक वाक्य में ★ 388. सुसमाचार की सच्चाई 1:7 ★ 389. मसीह 2:6 ★ 390. कुत्तों, दुष्ट कार्यकर्ताओं और अंगच्छेदों 3:2 ★ 391. एपाफ्रोदितुस 2:25 ★ 392. युवोदिया और सुनतूखे 4:2 ★ 393. तिमथी 2:19

कलोसियों के नाम पत्र: 394. खिझाया 3:21 ★ 395. आत्मा 1:8 ★ 396. सन्तों 1:12 ★ 397. अन्धकार 1:13 ★ 398. पहलौठे 1:15 ★ 399. दास 3:24 ★ 400. कलीसिया 1:18 ★ 401. शान्ति 1:20 ★ 402. सीहासन, प्रभुत्व, अधिपत्य और अधिकार ★ 403. आरिस्तार्खुस 4:10 ★ 404. सेवक 1:25 ★ 405. मारकुस 4:10 ★ 406. ईश्वर 3:3 ★ 407. पवित्र एवं परमप्रिय 3:12 ★ 408. वैद्य 4:14 ★ 409. एपाफ्रास 1:7 ★ 410. तुखिकुस 4:7

थेसलनीकियों के नाम पहला पत्र: 411. प्रेम से 1:3 ★ 412. विश्वास 3:10 ★ 413. सन्त पौलुस 2:1 ★ 414. हमारा हृदय परखने वाले ईश्वर 2:4 ★ 415. देवमूर्तियॉ 1:9 ★ 416. मसीह के प्रेरित होने के नाते 2:7 ★ 417. मुक्ति 5:8 ★ 418. पवित्र आत्मा 1:6 ★ 419. आनन्द 3:9 ★ 420. उपदेश और सान्त्वना 2:12 ★ 421. यहूदियों 2:14 ★ 422. थेसलनीकियों (आप) के दर्शनों के लिए 2:17 ★ 423. तिमथी 3:2 ★ 424. आथेंस 3:1 ★ 425. सन्त पौलुस 3:6 ★ 426. पवित्र और निर्दोष 3:13 ★ 427. प्रभु का दिन 5:1 ★ 428. यहूदियों 2:15 ★ 429. अपने भाई 4.6 ★ 430. हर समय 5:15 ★ 431. जिन्हें कोई आशा नहीं है 4:13 ★ 432. मसीह के 4:15 ★ 433. महादूत की वाणी तथा ईश्वर की तुरही 4:16 ★ 434. तुरही 4:16 ★ 435. विश्वास एवं प्रेम 5:8 ★ 436. फिलिप्पी 2:2 ★ 437. भ्रातृप्रेम 4:10 ★ 438. धन्यवाद 5:18 ★ 439. मनुष्यों का 2:6 ★ 440. शैतान 2:18 ★ 441. वासना 4:5 ★ 442. मर्यादा 4:6 ★ 443. पवित्रता 4:7 ★ 444. भ्रातृप्रेम 4:9 ★ 445. आत्मा की प्रेरणा 5:19 ★ 446. थोसलनीकियों (आप) और ईश्वर 2:10 ★ 447. मृतकों 4:13 ★ 448. गैर यहूदियों 4:5

थेसलनीकियों के नाम दूसरा पत्र: 449. पिता ईश्वर और ईसा मसीह 1:1 ★ 450. प्रभु ईसा मसीह 3:6 ★ 451. उन में विश्वास किया होगा 1:10 ★ 452. ईश्वर 1:11 ★ 453. जो काम नही करते और उस परम्परा के अनुसार नही चलते 3:6 ★ 454. विनाश 2:4 ★ 455. अधर्म की रहस्यमय शक्ति 2:7 ★ 456. शैतान 2:9 ★ 457. हमारे प्रभु ईसा मसीह की कृपा आप सब पर बनी रहें। 3:18 ★ 458. प्रभु ईसा मसीह की महिमा 2:14 ★ 459. दुसरों का कमाई की रोटी 3:12 ★ 460. मौखिक रुप या पत्र द्वारा 2:15 ★ 461. प्रभु ईसा मसीह तथा ईश्वर हमारा पिता 2:16 ★ 462. प्रभु 3:3 ★ 463. ईश्वर के प्रेम और मसीह के धर्य 3:5 ★ 464. आत्मा 2:13 ★ 465. नियम 3:10 ★ 466. आलस्य, दूसरों 3:11 ★ 467. आप लोग (थेसलनीकियों) 1:12 ★ 468. सम्बन्ध 3:14 ★ 469. विधर्मी 2:8 ★ 470. आप लोग (थेसलनीकियों) 1:3 ★ 471. जो ईश्वर को स्वीकार नही करते और प्रभु का सुसमाचार सुनने से इनकार करते है 1:8 ★ 472. हर समय 3:16

खाली स्थान

473. आगमन के प्रताप 2:8 ★ 474. कलीसियाओं 1:4 ★ 475. मुत 3:8 ★ 476. प्रार्थना 1:11 ★ 477. न बहकाये 2:3 ★ 478. अपने मुख के निष्वास 2:8 ★ 479. प्रभु में 3:4 ★ 480. आलस्य 3.11 ★ 481. प्रज्वलित अग्नि 1:7 ★ 482.

घमण्ड 2:4 ★ 483. विधर्मी 2:12 ★ 484. चिरस्थायी, उज्जवल 2:16 ★ 485. ईश्वर के प्रेम तथा मसीह 3:5

सही व गलत

486. गलत 2:17 ★ 487. सही 1:8 ★ 488. सही 2:10 ★ 489. गलत 3:10 ★ 490. सही 2:15

अध्याय और वाक्यांश

491. 3:2 ★ 492. 2:13 ★ 493. 1:11 ★ 494. 3:12 ★ 495. 2:4 ★ 496. 3:3 ★ 497. 3:16

तिमथी के नाम पहला पत्र

498. 3:16 ★ 499. 20 ★ 500. धर्मषिक्षा 2:11 ★ 501. अनुग्रह 1:14 ★ 502. निर्दोष 6:14 ★ 503. षु)ता 4:12 ★ 504. अध्यक्ष 3:1 ★ 505. धनियों 6:17 ★ 506. तिमथी 6:20 ★ 507. घमण्ड 6:17 ★ 508. भोग-विलास5:6 ★ 509. 4:12 ★ 510. पिता 5:1

अध्याय और पद संख्या

511. 6:21 ★ 512. 1:13★ 513. 6:11

सही या गलत का निशान

514. सही 4:1 ★ 515. गलत 5:2 ★ 516. गलत 4:.8 ★ 517. सही 6:8 ★ 518. गलत 4:7 ★ 519. सही 2:13

वाक्य सही कीजिये

520. आप सभी पर कृपा बनी रहे। 6:21 ★ 521. भक्ति से अवष्य बडा लाभ होता है। 6:6 ★ 522. मसीह मनुश्य के रुप में प्रकट हुए। 3:16 ★ 523. यह सुसमाचार परमधन्य ईष्वर की महिमा प्रकट करता और मुझे सौंपा गया है। 1:11 ★ 524. यह सुसमाचार परमधन्य ईष्वर की महिमा प्रकट करता है। 1:11

तिमथी के नाम दूसरा पत्र

525. दाऊद 2:8 ★ 526. मापदण्ड 1:13 ★ 527. सौनिक 2:3 ★ 528. मुकर 2:13 ★ 529. एफेसुस 1:18 ★ 530. किसान 2:6 ★ 531. अपराधी 2:9 ★ 532. वरदान 1:6 ★ 533. ओनेसिफोरुस 1:16 ★ 534. अत्याचार 3:12 ★ 535. फन्दे 4:18 ★ 536. सच्चाई 2:25 ★ 537. (फनमेजपवद पे दवज बसमंत) 2:11 ★ 538. प्रेरित 1:11 ★ 539. शान्ति 1:2 ★ 540. पवित्र आत्मा 1:14 ★ 541. बचपन 3:15 ★ 542. आत्मसंयम 1:7 ★ 543. ईष्वर की प्रेरणा 3:16

अध्याय और पद संख्या

544. 2:8 ★ 545. 2:19 ★ 546. 4:6 ★ 547. 2:19 ★ 548. 4:14 ★ 549. 2:8 ★ 550. 4:2 ★ 551. 1:1 ★ 552. 4:22

वाक्य सही कीजिये

553. जो प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से दूर रहे। 2:19 ★ 554. ईश्वर ने हमारा उद्धार किया और हमें पवित्र जीवन विताने के लिए बुलाया। 1:9 ★ 555. प्रभु उसे यह वरदान दे कि वह उस दिन प्रभु की दया प्राप्त करें। 1:18 ★ 556. लौकिक और व्यर्थ बकवास से दूर रहो। 2:16 ★ 557. तुम मेरे साथ सुसमाचार के लिए कश्ट सहते रहो। 1:8 ★ 558. यदी हम उन्हें अस्वीकार करते है, तो वह भी हमें अस्वीकार करेंगे। 2:12 ★ 559. पुत्र! तुम ईसा मसीह की कृपा से बल ग्रहण करते रहो। 2:1 ★ 560. ईष्वर का वचन बन्दी नही होता। 2:9 ★ 561. यदी हम दृढ़ रहे, तो उनके साथ राज्य करेंगे। 2:12 ★ 562. प्रभु उस को उसके कर्मो का फल देगा। 4:14 ★ 563. सुसमाचार सुनाओ, समय-असमय लोगो से आग्रह करते रहो। 4:2

सही या गलत का निशान

564. गलत 2:24 ★ 565. गलत 4:16 ★ 566. गलत 2:16 ★ 567. सही 2:20 ★ 568. गलत 4:20 ★ 569. गलत 3:16 ★ 570. गलत 4:11

तीतुस के नाम पत्र

571. कारिन्दा 1:7 ★ 572. जेनास 3:13 ★ 573. अनुरुप 2:3 ★ 574. संयम 2:8 ★ 575. निरर्थक 3:9 ★ 576. भ्रामक 3:10

सही या गलत

577. गलत 2:9 ★ 578. सही 1:12 ★ 579. गलत 1:10 ★ 580. सही 1:12 ★ 581. गलत 1:2 ★ 582. सही 2:6 ★ 583. सही 1:4

सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान

584. जेनास 3:13 ★ 585. मुक्तिदाता 1:4 ★ 586. पृथ्वी 3:4 ★ 587. नमस्कार 3:15 ★ 588. घृणित 3:3

अध्याय और पद संख्या

590. 1:15 ★ 591. 2:1 ★ 592. 3:15 ★ 593. 1:1 ★ 594. 1:1

सही वाक्य लिखे

595. अपने घर का प्रबन्ध करे और अपने पति के अधीन रहें। 2:5 ★ 596. हर प्रकार की बुराई से मुक्त करें और हमें एक ऐसी प्रजा बनाये। 2:14 ★ 597. मेरे सभी साथी तुम को नमस्कार करते हैं। 3:15 ★ 598. अधार्मिकता तथा विशयवासना त्याग कर हम इस पृथ्वी पर संयम,न्याय तथा भक्ति का जीवन बितायें। 2:12

फिलेमोन के नाम पत्र

599. विश्वास 1:5 ★ 600. हरा 1:20 ★ 601. उपयोगी 1:11 ★ 602. एपाफास 1:23

सामान्य ज्ञान

603. फरीसी ★ 604. यूनानी ★ 605. रोम ★ 606. 25 जनवरी ★ 607. कुरिन्थ ★ 608. लुस्त्रा ★ 609. येरुसालेम ★ 610. छोटा या विनम्र

★★★

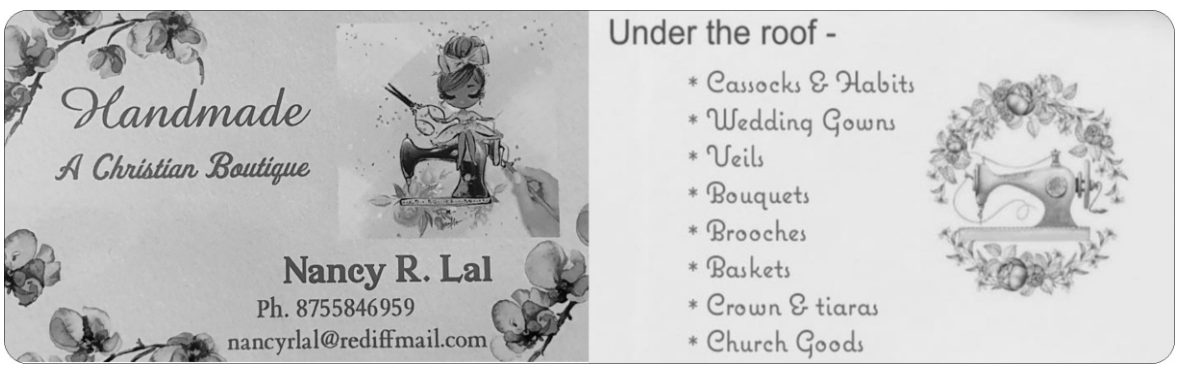

Archdiocese at a glance...cont.

Congrates... 2nd Episcopal Anniversary

2 New Projects launched to help Corona Patients, Fatima Hospital, Agra

Grand Parents' Day celebrations: St. Patrick's Church, Agra, Holy Family Church, Tundla & St. Francis Church, Hathras

Pastoral Visit, Dholpur

CSSS supports the needy

1st Communion & Confirmation, Cathedral

FSMA Sesquicentennial Jubilee, Aligarh

Whole Night with the Lord, Cathedral

Vianney Day, St. Mary's Church, Agra

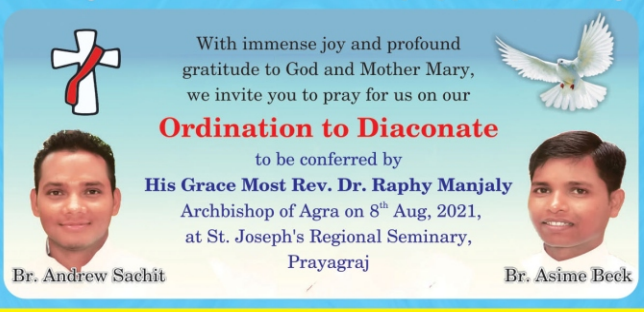

Editorial Team : Fr. E. Moon Lazarus, Fr. Jacob P., Dr. Antony A. P., Mrs. Nishi Augustine

With Best Compliments From :

The Manager, Principal, Staff & Students of

St. Peter's School

Kesth P.O,Etawah (Dist), Jaswant Nagar,U.P., Pin:206245

For Private Circulation Only

Printed at
St. Joseph's Printing School
Motilal Nehru Road, Agra-3
Ph. : 2854123

Edited and Published by
Fr. E. Moon Lazarus
Cathedral House
Wazirpura Road, Agra-282 003
E-mail : agradiance@yahoo.com